मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक ११५/११६ नवम्बर-डिसम्बर-२०१६

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४४ वाँ
प्राकट्योत्सव एवं नूतनवर्षाभिनंदन

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का
४४ वाँ प्राकट्योत्सव के अवसर पर ब्रिटीश हाईकमिश्नरका सन्मान

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १० ● अंक : ११५/११६

नवम्बर/दिसम्बर-२०१६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	जगन्नाथपुरी का प्रसाद	०७
०४.	नारायण ही स्वामिनारायण है	१०
०५.	आत्यंतिक मोक्ष शुद्ध सर्पोरि उपासना विना संभव है ?	१२
०६.	शीघ्र कवि स्वामी भूमानंद	१९
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	२१
०८.	सत्संग बालवाटिका	२३
०९.	भक्ति सुधा	२५
१०.	सत्संग समाचार	२८

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

दीपावली पर्व सभी ने आनंद उल्लास के साथ मनाया । परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल की उपस्थिति में शारदा पूजन, नूतन वर्ष का अन्न-कूटोत्सव, दर्शन का लाभ सभीने लिया । यह सुख अलौकिक है । जगत का सुख क्षणिक है । शरीर को प्रसन्न करना किस कामका जब कि वह नाशवंत है । सभी अवतार के अवतारी परब्रह्म परमात्मा इष्टदेव श्रीहरि जिसमें प्रसन्न हो वही करना चाहिए । चातुर्मास पूर्ण हो गया । अब धनुर्मास प्रारंभ होगा । छोटे-बड़े सभी हरिभक्त अपने मंदिरों में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि का लाभ अवश्य लें . हमलोगों का सदा चातुर्मास ही है । जिन्हे भजन करनी है उनके लिये सदा चातुर्मास है ।

हमें दशांश-विशांश भाग देवता को अर्पण करते हैं ? इस वात का सभी को विशेष ध्यान रखना चाहिये । अपने देश के प्रधानमंत्रीने ५००/- १०००/- रुपये की करन्सी नोट बन्द कर दिया, जो टेक्स नहीं भरते उनकी नींद हराम करदी । अपने इष्टदेव बड़े दयालु हैं । हम जो उद्यम करते है उस कमाई में से १० वां २० वां भाग देव को अर्पित करते हैं । ये सभी आज्ञा प्रभु की शिक्षापत्री श्लोक २१२ के अनुसार है । अंत में श्रीहरि को अंतर में धारण करना चाहिये यह वचनामृत का नित्य अनुसंधान करते रहना चाहिये ।

वह अन्तर्दृष्टि क्या है ?

वह जो हमें प्रत्यक्ष भगवान मिले हैं उन्हीं की मूर्ति के सामने प्रत्यक्ष अन्तर्दृष्टि से देखते रहना, तथा वह मूर्ति के विना षटचक्र दिखाई देता है अथवा गोलोक वैकुंठादिक भगवान के धाम दिखाई दें तो भी वह अंतर्दृष्टि नहीं । इस लिये भगवान की मूर्ति को अंतर में धारण करके उसी के सामने देखते रहना वही अन्तदृष्टि कही जायेगी । उस मूर्ति के विना अन्यत्र जहाँ जहाँ वृत्ति रहे वह सभी बाह्य दृष्टि कही जायेगी ।

इसलिये प्रिय भक्तो ! हम लोगो को चाहिये कि सदा श्रीहरि जैसे है वैसे ही उन्हें अन्तर में धारण करते रहना चाहिये । चलते-फिरते, उठते-बैठते सभी क्रिया में भगवान का सतत चिन्तन करते रहना चाहिये । जिससे अपने आत्यंतिक कल्याण हो सके ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूम्बर-२०१६)

१-२ श्री नरनारायणदेव देश राजस्थान कोटा शहर में नूतन मंदिर और यात्रिक भवन के शिलान्यास की विधिका पदार्पण।

४ प.भ. जयरामभाई कानाणी की नई स्कीम के भूमि पूजन प्रसंग में पदार्पण, मणीनगर।

७ ध्रांगध्रा में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में (बहनों के खात मुहूर्त प्रसंग में पदार्पण।

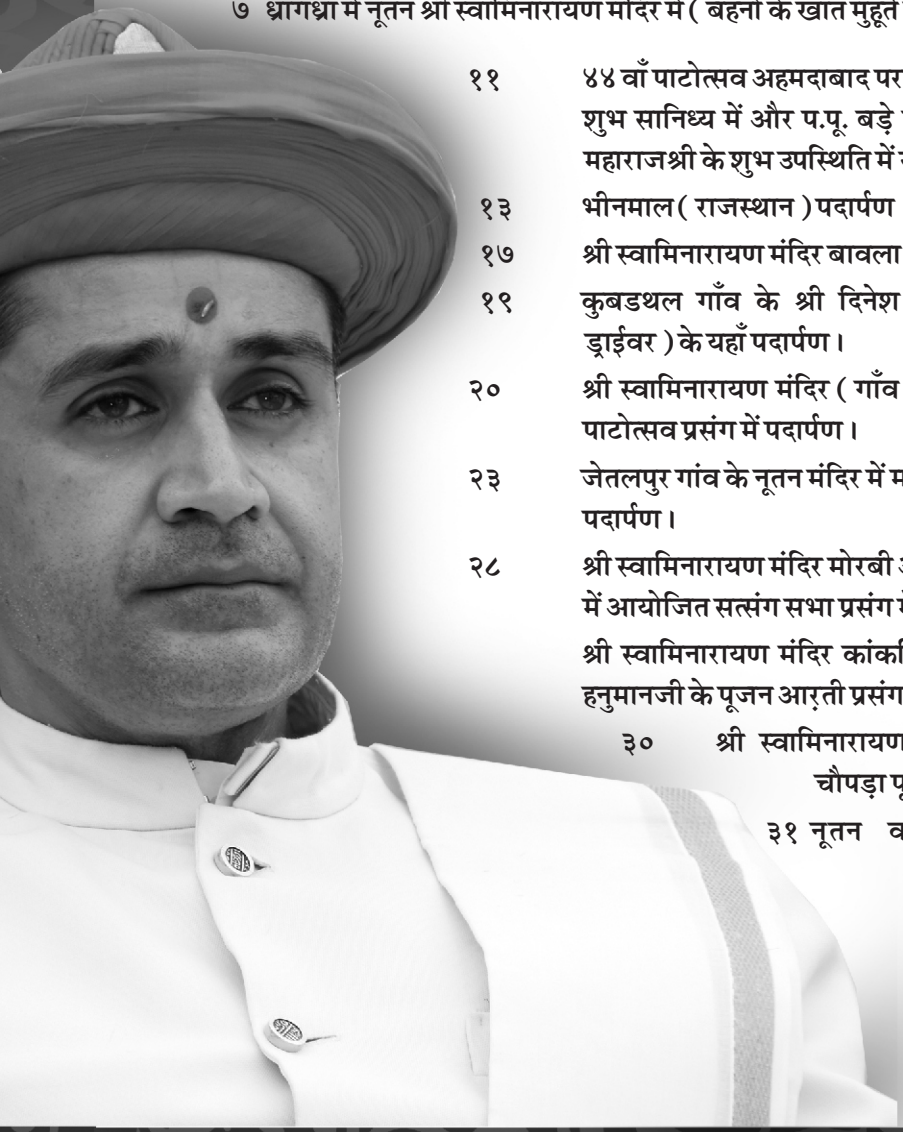

११ ४४ वाँ पाटोत्सव अहमदाबाद परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में और प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ उपस्थिति में संत हरिभक्तों ने उत्सव मनाया।

१३ भीनमाल (राजस्थान) पदार्पण।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला पाटोत्सव प्रसंग में पदार्पण।

१९ कुबडथल गाँव के श्री दिनेश पटेल (प.पू. महाराजश्री के ड्राईवर) के यहाँ पदार्पण।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर (गाँव के पुराने हरि मंदिर) महेसाणा पाटोत्सव प्रसंग में पदार्पण।

२३ जेतलपुर गांव के नूतन मंदिर में माताजी की प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग में पदार्पण।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी आगामी दशाब्दी महोत्सव प्रसंग में आयोजित सत्संग सभा प्रसंग में पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी के पूजन आरती प्रसंग में पदार्पण।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में सामूहिक चौपड़ा पूजन स्वयं सम्पन्न किया।

३१ नूतन वर्ष में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती की और बैठक में सभी को दर्शन का लाभ मिला।

(नवम्बर-२०१६)

१ से ८ अमेरिका में पदार्पण वहाँ से कैनेडा गये, जहाँ रेजिना (कैनेडा) में श्री स्वामिनारायण मंदिर की मुर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग में पदार्पण किया।

११ श्री रंगमहोल श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव-अभिषेक को स्वयं षोडशोचार पूर्वक सम्पन्न किया।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर सिंहपुर के पाटोत्सव प्रसंग में पदार्पण किया।

१३ मिरोली गांव में पदार्पण, वहाँ से उनावा श्री स्वामिनारायण मंदिर कथा प्रसंग में पदार्पण।

१४ कडी गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग में पदार्पण, उसके बाद सरढोज में पदार्पण।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर के पाटोत्सव प्रसंग में पदार्पण।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वडजर के पाटोत्सव प्रसंग में पदार्पण।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर मरतोली के पाटोत्सव प्रसंग में पदार्पण।

२५ से ७ दिसम्बर में अमेरिका के एल.ए. के श्री स्वामिनारायण मंदिर और सानहोजे मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग और चेरीहिल मंदिर के शाकोत्सव प्रसंग में पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अक्टूम्बर-२०१६)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर अप्रोच बापुनगर युवा शिबिर प्रसंग में पदार्पण।

८ जेतलपुर अक्षर महोली वाडी में अपने संस्कृत पाठशाला में सरस्वती पूजन प्रसंग में पदार्पण।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४४ वें प्राकट्योत्सव स्वयं की उपस्थिति में सम्पन्न किया।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के शरद पूर्णिमा के प्रसंग में पदार्पण।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी के पूजन आरती प्रसंग में पदार्पण।

३१ नूतन वर्ष में श्री नरनारायणदेव के दर्शन किये और बैठक में सभी को दर्शन आशीर्वाद दिये और अन्नकूट दर्शन कर स्वस्थान पधारे।

(नवम्बर-२०१६)

९ कोबा गांधीनगर में सत्संग युवा शिबिर को स्वयं की अध्यक्षता में सम्पन्न किये।

११ कालुपुर के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री रंगमहोल घनश्याम महाराज के पाटोत्सव प्रसंग और श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल ने प्रबोधिनी एकादशी रात्री जागरण पर फूलहार पहना के स्वागत किया।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल श्री नरनारायणदेव युवक मण्डल द्वारा आयोजित सभा में पदार्पण.

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा तुलसी विवाह प्रसंग में पदार्पण।

जगन्नाथपुरी का प्रसाद

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

शिक्षापत्री श्लोक-१९ में भगवान श्री सहजानंद स्वामी ने आचार शुद्धि के अन्तर्गत लिखा है कि जिसके हाथ का बनाया हुआ अन्न तथा जल खपत न होता हो तो वह पकाया हुआ अन्नजल श्रीकृष्ण भगवान के प्रसाद का चरणामृत माहात्म्य के साथ हो तो भी जगन्नाथ पुरी के विना अन्य स्थानक का ग्रहण नहीं करना चाहिये । जगन्नाथ पुरी के प्रसाद को लेने में कोई दोष नहीं है।

पंच वर्तमान में आचार शुद्धि के विषय में अत्यन्त सूक्ष्मतम चिन्तन करने के बाद यह निश्चित किये कि किसी विषम परिस्थिति के आने पर छूट का विधान है। लेकिन बहुत स्पष्टरुप से जगन्नाथपुरी मंदिर के प्रसाद को स्वीकार करने में कोई दोष नहीं है। उसे विना संकोचके ग्रहण करने की आज्ञा दिये है। इस प्रसाद को ग्रहण करने की परंपरा तथा पवित्रता तथा महिमा पुराणो में भगवान वेद व्यासजीने वर्णित किया है। आज तथा भविष्य में ऐसी प्रगट-प्रत्यक्षपना का भाव समझ करके ही भगवान ने स्पष्ट रुप से कहा कि जगन्नाथजी का प्रसाद अवश्य स्वीकार करें।

इसके अलावा जगन्नाथपुरी तीर्थ की वात गढडा वचनामृत प्रथम के ६८ वे में अपने मुख से कहे कि जगन्नाथपुरी अर्थात् पुरुषोत्तमपुरी की मूर्तियो में रहकर हम पुजारी के भक्ति भाव तथा छलकपट नेत्रे करीने सर्वे देखता, वडी अमे अगणो तेरा काल में एक महीना सुधी ज्यारे निद्रा आवे त्यारे एम भासतुं जे अमे पुरुषोत्तमपुरीने विषे जईने जगन्नाथपुरीनी मूर्तिने विषे प्रवेश करीने रह्या छीए.

इस वचन का उल्लेख मात्र जगन्नाथपुरी की मूर्ति के विषय में कहा है. इसका मतलब यह कि जगन्नाथपुरी में श्रीहरि प्रगट-प्रत्यक्ष रुप से वर्तमान हैं । इसी तरह नीलकंठ वर्णी के स्वरुप में जगन्नाथ मंदिर में चातुर्मास पर्यन्त निवास किये थे।

जगन्नाथपुरी भगवान के प्रसाद का महत्व श्रीहरिने स्वमुख से गाया है। ऐसे मंदिर के प्रसाद की विशेषता जानने योग्य है।

जगन्नाथ मंदिर का निर्माण मालाव देश के राजा इन्द्रद्युम्नने किया है।

एकबार राजा इन्द्रध्रुम्न को भगवानने स्वप्न में कहा कि समुद्र के किनारे पवित्र काष्ठ आयेगा उस में से मेरी मूर्ति बनाने के लिये विश्वकर्मा आयेंगे, उन्हें इस काष्ठ को देना उस काष्ठ से वे मूर्ति बनायेंगे बाद में तूं उसे मंदिर में प्रतिष्ठित कर देना।

दूसरे दिन समुद्र के किनारे राजा जाते है। किनारे पर तैरता एक काष्ठ दिखाई दिया । उसी दिन स्वयं विश्वकर्माजी (ब्रह्मा) मूर्ति बनाने के लिये काष्ठ मांगते है, राजा काष्ठ देता है। और पूछते हैं कि मूर्ति बनाने में कितना समय लगेगा ? विश्वकर्माजी कहते हैं कि तीन महीने का समय लगेगा। मैं एक कमरे में बैठकर मूर्ति

का निर्माण करुंगा । तीन महीने पूर्ण होते दरवजा खोलें तो मूर्ति तैयार मिलेगी ।

एक-दो महीने कासमय हुआ कि राजा को उत्सुकता हुई देखूं तो कितना काम हुआ है । इतने में राजा कमरे का द्वार खोलते हैं तो अस्पष्ट अंगो के आकार वाली मूर्ति का दर्शन होता है, विश्वकर्मा भगवान को आश्चर्य के साथ दुःख हुआ, राजा से कहे कि तुम्हारी अतिशय उत्सुकता के कारण प्रभु के अंगो का आकार नहीं दे सकता । हरि इच्छा बलीयसि । ऐसा कहे । उस समय भगवान जगतपति जगन्नाथ प्रगट हुये और कहे कि मैं इन्हीं अपूर्ण मूर्तियो में प्रगट रुप से रहूँगा, मेरी प्रतिष्ठा करवाओ ।

राजा इन्द्रध्रुम्नने जिस मंदिर का निर्माण करवाया उसमें श्रीकृष्ण, बलदेवजी, बहन सुभद्राजी की मूर्तियो की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे की गई । स्थानिक परंपरानुसार भातका भोग लगाया गया । उस समय शिवादि तैतीस कोटि देवता, ऋषि मुनि, गंधर्व, चारण, किन्नर इत्यादि दर्शन करने आये थे । उत्सव के प्रसंग पर ताल-मृदंग, वाद्य बजाकर आनंद में नृत्य हो रहा था । देवता भात बना रहे थे । तथा भगवान को भोग लगा रहे थे । उस प्रसाद को लेने के लिये देवादि भक्तजन दौड़पड़े । चारो तरफ प्रसाद गिर पड़ता है । इस प्रसाद की महिमा समझकर देवता लोग तथा स्वयं महादेव उस प्रसाद को ग्रहण करते हैं । भगवान का उत्सव मनाते हैं । उसी समय ब्रह्माजी आते हैं । उन्हें भी प्रसाद दिया जाता है वे पकाये भात के प्रसाद को स्वीकार नहीं करते हैं इससे उन्हें भगवान का दर्शन नही होता । उस समय ब्रह्माजी शिवजी से कहते हैं कि भगवान कहाँ है ? शिवजीने कहा कि सामने भगवान दर्शन दे रहे हैं । पकाये भात में शंका होने के कारण भगवान का दर्शन ब्रह्मा को नहीं होता, इससे वे वंचित रह जाते हैं । जिन-जिन देवों ने भगवान के भात का प्रसाद ग्रहण किया उन्हें भगवान का दर्शन हुआ । जिन्हें प्रसाद में शंका हुई उन्हें दर्शन नहीं हुआ । जो भगवान के प्रसाद को ग्रहण करते हैं उन्हें ही भगवान के दर्शन में अधिकार है ।

उसी दिन से दर्शन करने के लिये आने वाले दर्शनार्थी प्रथम प्रसाद ग्रहण करते हैं, बाद में मंदिर में दर्शन करने जाते हैं ।

वर्णाश्रम के धर्म-मर्यादा अन्यत्र के प्रसाद में भले बाधक हो लेकिन यहाँ के पकाये भात के प्रसाद को ग्रहण करने में कोई बाधा नहीं है, इस भात को अत्यंत पवित्र माना जाता है ।

मंदिर के साथ बहुत सारी चमत्कारी विशेषतायें है जो जानने योग्य है । दिन में दस से इग्यारह बाह भगवान को भोग लगाया जाता है । जो प्रसाद बनाया जाता है वह सम्पूर्ण का भोग लगा दिया जाता है । मिट्टी के घड़े में लकड़ी की आग पर भात पकाया जाता है । एकके ऊपर एक इस तरह सात घड़े रखखर सभी में भात पकाया जाता है । आंच नीचे के घड़े में लगती है और सबसे ऊपर वाला घड़ा काभात सर्व प्रथम पकता है इसके बाद दूसरा इसी क्रम से सबसे नीचे बाला घट का भात अन्त में पकता है ।

दर्शनार्थियो के लिये जितना आवश्यक हो उतना प्रसाद भगवान को भोग के रुप में रखा जाता है । यही भक्तों को प्रसाद दिया जाता है । बड़े प्रसंग में १५ से २० बार भोग लगाया जाता है । जिस घड़े में एकबार भात पका दिया जाता है पुनः उस में नहीं पकाया जाता । बारह महीने में जितने भी व्रत-उत्सव आते है सभी अवसर पर एक मात्र भात का ही भोग लगता है । भक्तों को इसी का प्रसाद दिया जाता है । इस प्रसाद को ग्रहण करने से व्रत भंग का दोष नहीं लगता । पूर्व के इतिहास में मूर्तियो को खंडित करने के कारण हिन्दुओं के अलांवा अन्य वर्ण के प्रवेश पर प्रतिबन्धहै । इसी परिप्रेक्ष्य में भगवान के दर्शन से जीवमात्र वंचित न रहजाय इसके लिये आषाढ शुक्ल द्वितीया को भगवान बलभद्र तथा सुभद्रा के साथ अपने मामा के घर जाते हैं । इसी उपलक्ष्य में

रथयात्रा का आयोजन आज भी परंपरा अनुसार निकाली जाती है । नव दिन तक मौसी के घर रहकर आषाढ शुक्ल एकादशी को तीनो स्वरुप अलग-अलग रथ में बैठकर अपने मंदिर में वापस आते है । उस समय भगवान के रथ को मंदिर के दरवाजे के पास लक्ष्मीजी रोकती है । सुभद्रा-बलदेवजी की मूर्तियां पदार्पण करती है लेकिन भगवान मंदिर के पीठेवाले दरवाजे से प्रवेश करते हैं । यह परंपरा आज भी चालू है ।

प्रत्येक बारह वर्ष में आने वाले अधिक आषाढ मास में मूर्तियो को नूतन बनाकर प्रतिष्ठित किया जाता है । इसके अलांवा पुरानी मूर्तियो का अग्निदाह किया जाता है ।

जगन्नाथ मंदिर चारधाम में एक है । मंदिर के शिखर पर चक्र ध्वजा के रुप में रखा गया है । जहाँ तक चक्र का दर्शन होता है वहाँ तक जगन्नाथ विस्तार कहा जाता है । मंदिर के ऊपर से आज भी कोई पक्षी उड़ कर नही जाते । हेलीकोप्टर के ऊपर भी प्रतिबन्धकिया गया है । मंदिर की ध्वजा विपरीत दिशा में लहराती है । मंदिर की सेवा पूजा की रीति रामानंद संप्रदाय के साथ जुडी हुई है । मुख्य मंदिर की छाया दिन में दिखाई नहीं देती । अदृश्य हो जाती है । उसे कोई देख नहीं सकता ।

मंदिर के पास का समुद्र मंदिर के परिसर में आते ही आवाज बंद कर देता है । मंदिर कानिर्माण कार्य मालवा के नरेश इन्द्रध्रुम्न राजा के समय में प्रारंभ हुआ था तथा कलिंग राजा अनंतनाग देव के समय में निर्माण कार्य पूर्ण हुआ था ।

जगन्नाथपुरी का प्रसाद भगवान का स्वरुप होने से अति पवित्र है ऐसा स्कन्द पुराण में भगवान वेद व्यासजी ने लिखा है । पकाये भात को भोग लगाकर उसे सुखा दिया जाता है बाद में भक्त लोग उसे अपने घर लाकर पूजन करते हैं ।

ओकलेंड में न्युझीलेन्ड के अपने निष्ठावान सत्संगी रंजनबहन डॉ. कांतिभाई पटेल (निर्वाण हेल्थ ग्रुप) को एवोर्ड

जनवरी १९७७ से अपने श्री नरनारायणदेव देश के निष्ठावान और धर्मकुल के कृपापात्र परम भगवदीय डॉ. कांतिभाई पटेल के साथ उनकी धर्मपत्नी अ.सौ. रंजनबहनने न्युजीलेन्ड में प्रेक्टीस शुरु की थी । आज वही निर्वाण ग्रुप के अन्तर्गत समग्र न्युजीलेन्ड में सामाजिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में ३६ प्रकार की विविधसेवा दे रहे हैं ।

आज से दो वर्ष पूर्व अर्थात् दिसंबर २०१४ में उन्होंने गांधी निर्वाण स्थापना की । जिस में स्थानिक पुलिस की सहायता से धरेलुं हिंसा से पीडित या उसमें सामिल मूल ऐशिया खंड के व्यवस्था और उनके प्रश्नों के समाधान के लिए स्थानिक पुलिस तथा वही वही तंत्र में आवश्यकीय सहायता की जाती है । धीरे-धीरे इस ''गांधी निर्वाण'' के आंतरिक विचार इतना ज्यादा उपयोगी बन गया है कि अब इसमें यहाँ के स्थानिक लोगों को भी अनिवार्य सहायता किया जाता है ।

सारांशत: दो वर्ष में इस अभियान में ३०० परिवारों को सहायता की गयी है । ''गांधी निर्वाण'' के इस सामाजिक सुन्दर कामसे प्रेरित हो कर न्युजीलेन्ड पुलिस द्वारा चेलेंन्ज कोईन नाम का प्रतिष्ठित एवोर्ड देकर उनको सन्मानित किया गया है ।

२०११ में भी उनकों आई.वी.ए. ''बेस्ट बिजनेस बुमन ओफ ध इयर'' और २०१४ में ''ई ई ओ डायर्वसीटी'' एवोर्ड अंतर्गत ''वोक द रोक'' एवोर्ड भी दिया गया था ।

अ.सौ. रंजनबहन और प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल और उनके परिवार की ऐसी समाजलक्षी विविधसेवाओं के सुंगधसे श्रीनरनारायणदेव का समग्र धर्मकुल और समस्त सत्संग गौरान्वित हो रहा है । उनके उत्तरो-त्तर अभ्युदय के लिए श्री नरनारायणदेव के श्री चरणों में प्रार्थना ।

नारायण ही स्वामिनारायण है

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री इस तरह भगवान श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के अपने आशीर्वचन में प्रायः सुनने को मिलता है कि "श्रीजी महाराज तथा श्री नरनारायणदेव में लेश मात्र भी अन्तर नहीं है। इसमें विशेष महत्व हैं तभी आप सभी के मुख से बारंबार सुनने में मिलता है। यह वचन नंद-संतो द्वारा रचित शास्त्र प्रमाण होते हुये भी गृही त्यागी दोनो वर्ग में कितने लोगों द्वारा सत्य नहीं माना जाता है। जो लोग सत्य मानते हैं वे भगवान स्वामिनारायण को पहचान लिये हैं। जिन्हें श्री नरनारायणदेव में निश्चय, दृढ आश्रय, दृढ निष्ठा है उन्हें ही आश्रित समझा जायेगा। उन्हीं का आत्यंतिक कल्याण निश्चित है।

वि.स. २०७३ को नूतन वर्ष का प्रारंभ हुआ है इस वर्ष जिन धर्म प्रेमी मनुष्यो को सत्संग का योग हुआ हो वे लोग वचन की दृढता के अनुसार २०७३ अर्थात् २ + ० + ७ + = १२ जिससे इसलेख में अज्ञानरुपी अंधकार का नाशकरके सच्चे अर्थ में ज्ञान का प्रकाश फैले इस हेतु से नंद-संतो की १२ पंक्तियां यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

श्री बद्रिपति चरणरज, वंदु वारमवार ।
जो मुनिसम तप करत प्रभु, करत विश्व उद्धार ॥
नरनारायणदेवकु, भजत मिटही भवकंद ।
सो मम इष्ट अभीष्टप्रद, श्री गुरु सहजानन्द ॥

जिन संतो में हम सभी के इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान भी गुरु भाव रखते तथा जिन्हें सत्संग की मां कहते ऐसे स.गु. श्री मुक्तानदं स्वामी पंचरत्नम् वैराग्य चिन्तामणि के मंगलाचरण में श्री नरनारायणदेव तथा श्री सहजानंद स्वामी में एकात्मपना का भाव बताये हैं।

नरनारायण आज अवतारी, जुग जुग जन्म लेत दुःख हारी ।
पतित अनेक करत भवपारा, समज देख जग जुढ पसारा ॥
(वैराग्य चिंतामणि)

नरनारायदेव सो, जनहित प्रगट प्रमाण ।
गुरु गम करी तिनकुं मिले, तष सोई पायो ज्ञान ॥
प्रगट देव का ध्यान बिन, माया तरत न जंत ।
रवि बिन रात न मिटत जिमि, कहत सबहि श्रुति संत ॥
(ज्ञान चिंतामणि)

३

प्रभु बिन सबन से त्यागो, नरनारायण पद अनुरागते ।
तमन ममता अति विधन विडारो, युं हरिध्यान अदक उर धारो ॥
(घ्यान चिंतामणि)

पंच रत्न को पाठ नित्य, करत सुमति उठी भोर ।
नरनारायण उर विषे, मिटात मोह निशि घोर ॥
नरनारायणदेव के, अचल उपासक संत ।
तिन के चरन सरोज कुं, वंदु वार अनंत ॥
(निज्ञान चिंतामणि)

४

पुरुषोत्तम परब्रह्म, नरनारायणरुप सोई ।
एहि अलौकिक मर्म, जो जानत सोई भव तरत ॥
(श्री वासुदेवावतार चरित्रम)

सो नरनारायण प्रभु जेहा, पुरुष पुरातन तपस्वी तेहा ।
निज आतममे धरुं तेहि ध्याना, जो जंग हित तप करत सुजाना ॥
(श्री नारायण गीता)

उपरोक्त सभी पंक्तियां मुक्तानंद काव्यम् में लिखी हैं। वे श्रीहरि के संत थे फिर भी दोनो के स्वरुप में कोई अंतर न होते हुए भी श्री नरनारायण को अवतारी कहा है। ध्यान करने के लिये भी कहा है। पुरुषोत्तम परब्रह्म कहा है। पुरातन पुरुष कहा है इसके

अलांवा श्री नरनारायण के अचल उपासक संतो को अनंतवार वंदन करता हूँ। श्रीहरि को श्री नरनारायणदेव का स्वरुप कहा गया है।

५

श्री नरनारायण ऋषि रुप रे, थया प्रगट परम अनूप रे।
थया भक्तिधर्मना बाल रे, श्रीकृष्ण भक्त प्रतिपाल रे॥

निष्कुलानंद स्वामीने इस पंक्ति में लिखा है कि श्री नरनारायणऋषि ही श्रीहरि के रुप में प्रगट हुये।

६

जय अवतारना अवतारी, मत्स्य, कच्छ वाराह मुरारी।
जप नरहरि वामन नाथ, जय परशुराम रघुनाथ॥
जय हलधर कृष्ण कृपालु जय बुद्ध कलकी दयालु।
जय अलेखधर अवतार, जय अकल सर्व आधार॥
एवा अनेकधरी अवतार, जे सो बद्रितले बडे वीर।
रहो तापस वेषे हमेश, जटा मुकुट सुंदर शीश॥
(भक्त चिंतामणि)

७

मरिच्यादि ऋषि जब बद्रिकाश्रम में श्री नरनारायण देव का दर्शन करने जाते हैं तब श्री नरनारायणदेव की कृपा से अक्षराधिपति श्रीहरि का समाधिमें दर्शन होता है।

पछी बारे जोयुं आवी ज्यारे, दीठी तेनी ते मूरती त्यारे।
जेवा अक्षरधाम मां दीठा, तेवा दीठा सनमुख बेठा॥
ते तो नारायण नुं छे कृत्य, एमां नहि कांई अचरत्य॥
(भक्तचिंतामणि)

८

नरनारायणदेव भज्या बिनु भवजल कोउ न तारे सुनहु,
एहि प्रभु अकल रुप अवतारी, एही सब अंतर जामी।
प्रगट प्रमाण बिराजत भूपर, मुक्तानंद के स्वामी...सुन।

९

मात अहिंसा उतारे, आरती माता उतारे,
नरनारायण नवल छबी पर तन मन धनले वारे.. आरती
परापरपूरण पुरुषोत्तम, समरथ व्यापक सारे,
जाको दर्श परस जगमांही, जन्म कोटी अधधजारे.. आरती

आरती के इस पद में श्रीहरि के परम सखा स्वामी ब्रह्मानंद ने श्री नरनारायणदेव को पूर्म पुरुषोत्तम कहकर श्रीहरि के साथ एकात्मभाव प्रदर्शित किया है।

१०

नरनारायण स्वामिनारायण, भजमन प्रगट बिराजे हरि... नर
अक्षर पर पुरुषोत्तम स्वामि, मनुष्यदेह धरि आये हरि,
जेहि जन आई लेहे इन शरनो, तिन के पाप सब जात हरि... नर

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा विरचित यह कीर्तन की एक पंक्ति है। जिस में श्री नरनारायणदेव तथा स्वामिनारायण का एकात्म भाव प्रदर्शित किया गया है।

११

कर्युं सर्वे तीर्थ मां शिरोमणी रे, श्रीनगर सुंदर धाम,
इष्टदेव ए भरतखंडना रे, नरनारायण जेनुं नाम,
बद्रिआश्रम थी आवी वस्या रे... १
एना अवतार भरतखंडमां रे, रामकृष्ण आदिक जेह,
कर्या नारायण परायण सर्वे जीवने रे, भक्ति धर्मनंदन थाय तेह
बद्रिआश्रम थी आवी वस्या रे... २
प्रगट हता ते प्रतिमामा रह्या रे, आज भूमानंदनो श्याम
बद्रिआश्रम थी आवी वस्या रे... ४

दोनो स्वरुपों में अभिन्नपना प्रदर्शित करके भूमानंद स्वामी ने श्रीहरि श्री नरनारायणदेव की मूर्ति प्रगट विराजमान है।

१२

पोते नरनारायण बोलिया रे, मने वाला पुनमिया दास
एम जाणीने पूनमे आवजो रे,

पेईज नं. १४

आत्यंतिक मोक्ष शुद्ध सर्वोरि उपासना विना संभव है ?

- जयंतीलाल के. सोनी (मेमनगर-अमदावाद)

श्रीजी महाराजने स्वमुख से अपने पुरुषोत्तमपना का अनेक प्रसंग कहे हैं। आश्चर्य कारक बहुत सारे प्रसंग देखने में मिलते हैं। गढडा प्रथम के ५६ वें वचनामृत में ''गमे तेवो पापी होयने अंत समे जो तेने'' स्वामिनारायण ऐसे नाम का उच्चारण करता है तो वह पाप से मुक्त होकर अक्षरधाम को प्राप्त करता है सभी ब्रह्मांडो के प्रलय होने पर भी भगवान तो वही रहते हैं।(वचनामृत कारीयाणी-१)

इसी तरह बहुत सारे अवतार इस ब्रह्मांड में हुये हैं वे सभी अवतार स्वयं का कार्य पूर्ण करके अपने स्वरुप में विलीन हो जाते हैं। परंतु अक्षराधिपति पुरुषोत्तम किसी अवतार में विलीन नहीं होते। कारण यह कि ब्रह्मांड के वैराजनारायण के आधी आयु की प्रार्थना के संदर्भ में एक ही वार इस ब्रह्मांड में पधारे है।

उसी समय से सभी मुमुक्षुओं के लिये आत्यंतिक मोक्ष कौ मार्ग खोल दिये। श्रीजी महाराजने अपने पुरुषोत्तमपना का भाव वचनामृत में स्पष्ट कहे हैं। पुरुषोत्तमपना की स्पष्टता के लिये स्वयं पांचसो परमहंसो की तथा अपने गुरु रामानंद स्वामी की सोगंन्धखाई है।

वचनामृत गढडा प्रथम-६२ उन्चालिस गुण भगवान में सदा रहते हैं। वह कल्याणकारी गुण संतो में कैसे आते है ? श्रीजी महाराजने कहा कि भगवान के स्वरुप का यथार्थ निश्चय जब आता है तब भगवान के कल्याणकारी गुण संतो में आते हैं। भगवान के स्वरुप में जोनिश्चय करलेता है वह डिगता नहीं है। चाहे जितने प्रकार का शास्त्र सुने लेकिन उस में कोई परिवर्तन नहीं होता। इस प्रकार का जिस में निश्चय हुआ हो उसे भगवान का संबन्धकहा जायेगा।

गढडा प्रथम-५७ ''मोक्ष का असाधारण कारण यह क्या है ? इस पर श्रीजी महाराजने कहा कि जो भगवान के स्वरुप का ज्ञान तथा भगवान के माहात्म्य को जान लिया है वे दोनो असाधारण कारण मोक्ष के लिये हैं।

वच. अमदावाद-५ ''पुरुषोत्तम भगवान का असाधारण लक्षण क्या है ? श्रीजी महाराजने कहा कि ''अनेक जीव के प्राण की नाडी का संकोचन करके समाधिकराना यह दूसरे से संभव नहीं है। लक्षावधिमनुष्य नियम में रहकर जो वर्तन करते हैं वह दूसरों से संभव नहीं है तथा अक्षरादिक जो मुक्त वे भी नियम रखने का सामर्थ्य रहता है जो दूसरों में संभव नहीं, इसी तरह पुरुषोत्तम नारायण में असाधारण लक्षण है।

लोया-११ ''भगवान की मूर्ति जो स्वयं को मिली हो उसी को सेवा में रखनी चाहिये। भगवान के जितने अवतार हुये हैं उन मूर्तियों का ध्यान नहीं करना चाहिये। जो मूर्ति, सेवा में मिली हो उसी मूर्ति की पतिव्रता की तरह सेवा करनी चाहिये।

लोया-१२ ''निर्विकल्प निश्चय के कनिष्ठ मध्यम तथा उत्तम इस तरह तीन भेद किये गये हैं। उस में कनिष्ठ निश्चय वाला भगवान को कर्ता समझते हुये भी अकर्ता समझता है। इस के अलांवा निर्लेप ऐसे ब्रह्मरुप जो समझे वह निर्विकल्प में कनिष्ठ निश्चयवाला कहा जायेगा।

मध्यम निश्चयवाला निरन्नमुक्त जैसा होकर भगवान की उपासना करे तो उसे मध्यम निश्चयवाला कहा जायेगा उत्तम निश्चयवाला उसे कहा जायेगा जो भगवान पुरुषोत्तम नारायण सर्वावतारी सभी से ऊपर कर्ता हर्ता जानता है और अक्षररुप में रहकर पुरुषोत्तम की उपासना करता है उसे निर्विकल्प निश्चयवाला कहा

जायेगा।

लोया-१८ ''श्रीजी महाराज स्वयं कहते हैं कि भगवान का निश्चय होना सबसे कठिन है निश्चय की वात अत्यंत कठिन है। जो दृढता से स्वीकार करके करता है स्वीकरता है उसे मूल तत्व की समझ होती है अन्य को नहीं। जो इसवात को समझता है उसमें दूषण नहीं आता है। जो निश्चय की वात नहीं समझता उसमें कच्चापना समझना चाहिये।

ग.मध्य-९ श्रीजी ने कहा कि ''ज्ञान मार्ग तो एवो समझवो के कोई रीते भगवानना स्वरुपनो द्रोह थाय नहि। अने कोई काले भगवानना वचननो लोप थतो होय तो तेनी चिंता नहिं। पण भगवानना स्वरुपनो द्रोह थवा देवो नहिं। भगवानना स्वरुपनो द्रोह होय तो तेनो कोई रीते छुटको थाय नहीं। भगवानना स्वरुपनी निष्ठा पाकी नहीं होय तो ते ज्यारे देह मूकशे त्यारे कां तो ब्रह्मना लोकमां जशे कां तो कांईक बीजा देवताना लोकमां जशे पण पुरुषोत्तम भगवानना धाममां नहीं जाय।

ग.मध्य-१४ निरुत्थानपणे भगवानना निश्चय अमे तादात्म्यपणुं कहिये छीये। एवा अडग निश्चयवाला जे संत ते निवृत्तिमार्गने विशे वर्ते अथवा प्रवृत्ति मार्गने विशे वर्ते तो पण ते निर्गुण स्वरुप छे.

वडताल-१ जेने प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण भगवानना स्वरुपनो निश्चय थयो ने तेमां कोई जातनो कुतर्कन थाय तो ते पुरुष नो प्राण लीन न थयो होय तो पण निर्विकल्प समाधिछे।

अमदावाद-६ आ सत्संगने विषे जे भगवान विराजे छे तेज भगवानमांथी सर्व अवतार थाय छे ने पोते तो अवतारी छे।

अमदावाद-७ सर्व थकी एवुं जे श्री पुरुषोत्तम नारायणनुं धाम तेमा गया त्यां पण हुंज पुरुषोत्तम छुं मारा विना बीजो कोई देख्यो नहीं। सर्वे ब्रह्मांडोनी उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय तेनो कर्ता पण हूं छुं।

असलाली-१ भगवत स्वरुपज्ञाननी दृढता विना तो प्रजापति आदि लईने जे जगतना स्त्रष्टा छे ते वारंवार सृष्टि एक साथ उत्पन्न होती है। पाछा अंते मायाने विषेज लीन थाय छे।

गढडा अंत्य-१६ जे स्वरुपनी पोताने प्राप्ति थई होय ते संगाथेज प्रीति रहे ने तेनी मरजी प्रमाणे ज वर्ते छे अने बीजाने जे कोईक चे ते तो तेना जाणी ने माने माटे जाणी जोईने पोतानुं नामक कपावे ते भक्ति न करवी।

(१) पूर्वाश्रम का नाम गजो गढवी था। श्रीजी महाराज के प्रथम दर्शन से आकृष्ट होकर उनके दास हो गये। प्रभु से दीक्षा ग्रहण करके पूर्णानंद नाम से प्रतिष्ठित हुए, लेकिन अहंकारी होने के कारण दीक्षा त्याग कर पुनः गृहस्थ हो गये। परंतु उनके मन में स्वामिनारायण भगवान के प्रति दृढताथी इसलिये अन्य में मन नहीं जाता था।

(२) सत्संगिजीवन लिखते समय श्रीजी महाराज के स्वरुप का जब निरूपण कर रहे थे उस समय नित्यानंद स्वामी भगवान स्वामिनारायण को सर्व अवतार का अवतारी लिख रहे थे लेकिन भगवानने मनाकर दिया। ऐसे ही दीनानाथ भट्टने भी रामकृष्णादिक की तरह भगवान स्वामिनारायण को सर्व अवतार का अवतारी लिखे थे महाराजने उस पने को भी फाड कर फेंक दिया। महाराजने सभी संतो से कहा कि जो मेरी आज्ञा में है वे लोग थोड़ा भी शंका न करे और जैसा कहूं वैसा ही वर्तन करें।

स्वरुपानंद स्वामीने नरक के कुंड में दुःखी जीवों को श्रीहरि की कृपा से दूर करके भूमापुरुष के धाममें भेंज दिया। इस प्रसंग का वर्णन करके स्वामी कहते हैं कि श्रीजी महाराज बोले जे हे संतो अमो कोई दिवस अक्षरधाममांथी आ ब्रह्मांडमां आव्या नथी अने आवशुं पण नहिं माटे आज तो अमारे अगणित जीवनां कल्याण करवा छे। समग्र सत्संग का उत्तर दायित्व योगीराज गोपालानंद स्वामी के ऊपर सौंपदी। श्रीजी के अवतार की यह कथा अत्यंत अद्वितीय है। एकवार

गोपालानंद स्वामीने यह वात की ''ज्यारे श्रीहरि प्रगट थया त्यारे जे जे अवतारना उपासक श्रीजीनां दर्शने आवता ते सर्वेने श्रीजी महाराज पोतपोताना इष्टदेवना दर्शन करावता इसी तरह चौवीस अवतारों का दर्शन करवाते। मुसलमानो को अल्लाह का श्रावकों को तीर्थंकर का दर्शन कराते। इस तरह प्रत्येक अपने अपने इष्टदेवों का दर्शन करते। इस तरह उपासना में दृढता का भाव उत्पन्न करवाते। स.गु. आधारानंद स्वामीने स.गु. मुक्तानंद स्वामी के मुख से सुनी तथा वैसा ही स्वयं अनुभव भी कीये और महाराज के चरित्र को हरि चरित्रामृत सागर ग्रंथ में वर्णित किये। सं. १९१९ में हरिचरित्रामृत सागर ग्रंथ पूर्ण हुआ था। उस समय रघुवीरजी महाराज अक्षरधाम पधारे थे। उससे पूर्व रघुवीरजी महाराज आधारानंद स्वामी सेपूछे कि कितना बड़ा ग्रंथ तैयार हुआ। प्रथम से पांच तक का पुर स्वयं पढे थे। उसके बाद बोले कि -

"सर्वोपरि भये यह अवतारा,
ऐसे अवतार न थये कोई वारा।
सर्वोपरि जो चरित्र करता ही,
सत्संग में जन बोलत रहा ही॥"

इस तरह महाराजने सर्वोपरिपना का भाव अपने नंद संतो को बताया। अपने सर्वोपरि की दृढता के लिये स्वमुख से गुरु रामानंद स्वामी की सभा में ''श्री स्वामिनारायण'' नाम के मंत्र की उद्घोषण करके अपने आश्रितों के लिये आत्यंतिक कल्याण का मार्ग खोल दिया। यदि उपासना में कमी रह जायेगी तो प्रभु की प्राप्ति संभव ही नहीं होगी। इस लिये अपने आत्मा का आत्यंतिक कल्याण के लिये सर्वोपरि उपासना करना ही श्रेयष्कर है।

अनु. पेईज नं. ११ से आगे

मारे एथी अधिक ते कोय नहि रे,
एतो रे, शे सदा मारी पास... एम १
रुडी पुनम पवित्र रडियामणी रे, आज राखो दर्शनना नेम
एम नरनारायण बोलिया रे
सुख संपत्ति घणी तेणे पामशे रे,
घणुं रेशे कुशल ने क्षेम..... एम १
धाम अक्षर तुल्य अमदावाद छे रे
आज आथी अधिक नहि धाम... एम
पोते पूर्णानंदनो नाथजी रे,
स्वामी सहजानंद जेनुं नाम..... एम ४

इस तरह श्रीहरि के मुख से कहा गया है। यहाँ पर श्रीहरि श्री नरनारायणदेव के साथ स्वयं का अभिन्नपना बताकर प्रत्येक पूनम को सभी दर्शन करें इस तरह की आज्ञा की है।

सखी एक समे अमदावाद मां रे
राजे सहजानंद सुखकंद, चंद जोई पूनमनो निर्मलो रे,
एवुं जोईने श्री घनश्यामजी रे, बोल्या पूर्णानंदनो नाथ..चंद ४

★ ★ ★

ऊंचो उपाडी हाथ रे, एम बोल्या घनश्याम...कहु २
में पदरावी जे मूरतियुं रे, मंदिरुं माहि जेह...कहु
एसौ मारा रुप रे रे, तेमां नहि संदेह...कहु ३
नरनारायण तो हुं ज छुं रे, पूरण प्रगट प्रमाण...कहु
पूर्णानंद प्रमाण छे रे जाणो छो संत सुजाण...कहु ४

नंद संतो द्वारा रचित उपरोक्त १२ पंक्ति में स्वंय श्रीहरि ने स्वयं को श्री नरनारायण कहा है। जो एक दूसरे में न्यूनता देखते हैं वे गहर्य हैं। वे द्रोही कहे जायेंगे। इस लिये सं. २०७३ के नूतन वर्ष से आप सभी लोग अज्ञान दूर करके श्रीहरि की आज्ञा मानकर श्रीहरि तथा समग्र धर्मकुल के प्रति आदर भाव रखने से प्रसन्नता मिलेगी।

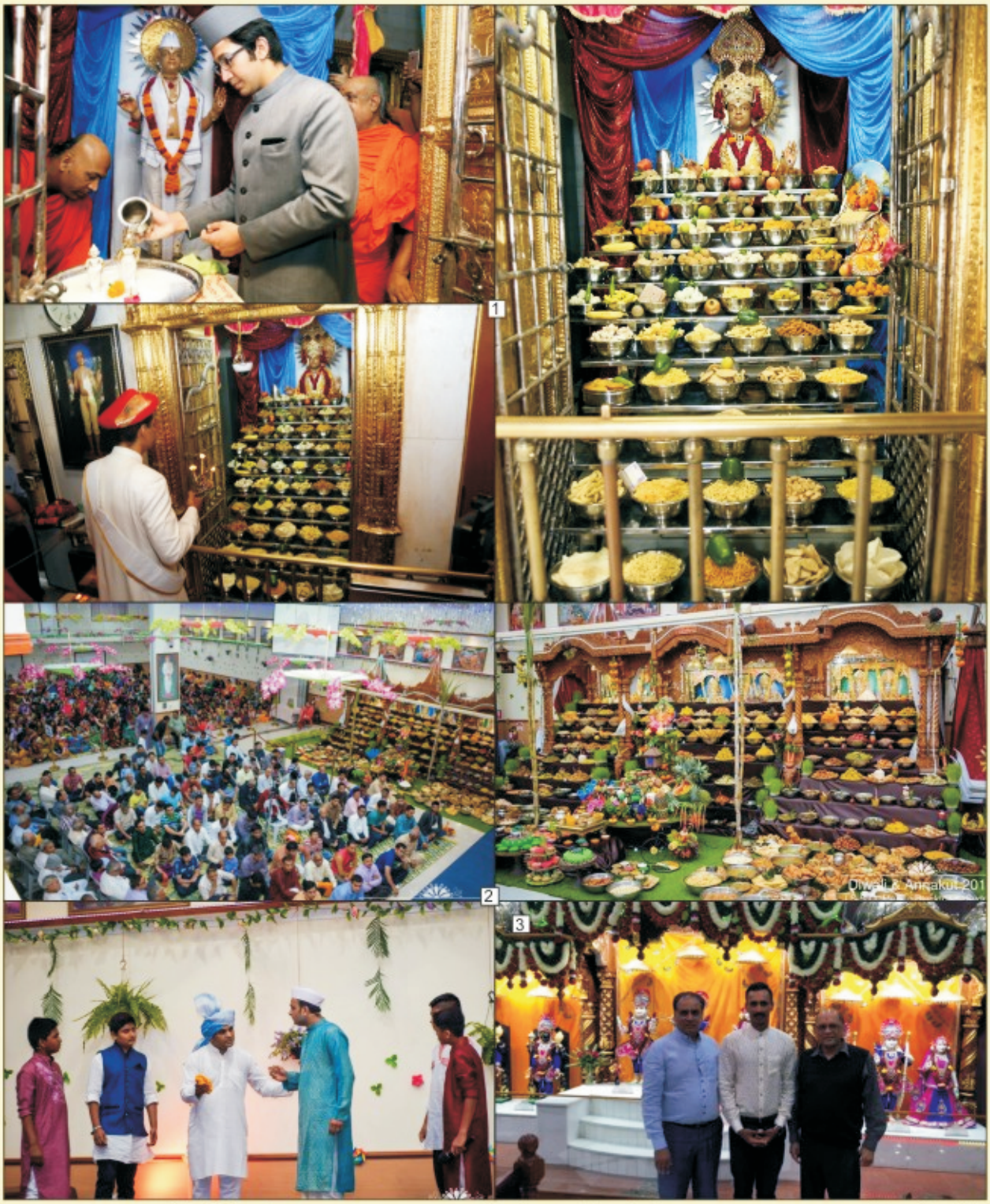

૧. અમદાવાદ કાલુપુર મંદિરમાં રંગમહોલ ઘનશ્યામ મહારાજના ૧૩૧માં પાટોત્સવ પ્રસંગે અભિષેક કરતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી તથા તે પ્રસંગે અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૨. સીડની (ઓસ્ટ્રેલિયા) મંદિરમાં ઠાકોરજી સમક્ષ અન્નકૂટ દર્શન તથા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમની ઝલક. ૩. ઓકલેન્ડ - ન્યૂઝીલેન્ડ મંદિરમાં આપણા સત્સંગી ક્રિકેટર જીત રાવળની પસંદગી ન્યુઝીલેન્ડની ટીમમાં ઓપનીંગ બેસ્ટમેન તરીકે થયા બાદ તેમના પિતાશ્રી તથા પ.ભ.ડો.કાંતિભાઈ પટેલ સાથે ઠાકોરજીના દર્શન કરતા.

૧. પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીની અધ્યક્ષતામાં કોબા - ગાંધીનગર ખાતે સત્સંગ યુવા શિબિરમાં યુવાનો સાથે વિચાર વિમર્શ કરતા. ૨. અમદાવાદ કાલુપુર મંદિરમાં શરદ પૂનમના શરદોત્સવની આરતી ઉતારતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી. ૩.અમદાવાદ કાલુપુર મંદિરમાં પ.પૂ.આચાર્ય

૧. શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર (બાઈઓનું) પ્રાંગધ્રા - હળવદ રોડ પર નૂતન મંદિરની ખાત વિધિ કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૨. મહેસાણા (ગામનું હરિ મંદિર)ના શતાબ્દી મહોત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી. ૩. શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુરમાં રંગ મહોલ શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજના પાટોત્સવ પ્રસંગે કથા પારાયણ કરતા પ.પૂ.શા.સ્વામી નિર્ગુણદાસજી તથા વ્યાસ પૂજન કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા યજમાન પરિવાર પ.ભ. શામજીભાઈ હરજીભાઈ હાલાઈ પરિવાર (ગોડપર - કચ્છ)

૧.૨જઈના - કેનેડા મંદિરમાં મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા વિધિ કરતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પ્રાસંગિક ઉદ્‌બોધન કરતા પ.પૂ.પી.પી.સ્વામી (જેતલપુર)
૨. શિકાગો મંદિરમાં સભામાં દર્શન આપતા પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી. ૩.ડીટ્રોઈટ મંદિરમાં શરદપૂનમના દર્શન. ૪. ટોરેન્ટો (કેનેડા) મંદિરમાં નૂતન વર્ષના ઠાકોરજીના અન્નકૂટ દર્શન. ૫.લેસ્ટર (યુ.કે.) મંદિરમાં નૂતન વર્ષના ઠાકોરજીના અન્નકૂટ દર્શન.

शीघ्र कवि स्वामी भूमानंद

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

स्वामिनारायण संप्रदाय में ''नंद'' अंत्याक्षर आवे इस तरह नामाभिधान किया जाता था। इस तरह ५०० जितने परमहंसो के जीवन का इतिहास कभी भूला नही जा सकता। उन काव्यत्व बड़ा ही दिव्य था। स्वामी भूमानंदने अभूतपूर्व साहित्य का संप्रदाय में योगदान किया है। वह हृदयस्पर्शी कीर्तन इस तरह है।

"सर्व सुखी जीवन जोवाने चालो रे,
शेरडियुं मां आवे लटकांतो लालो रे...."

यह अधिक प्रचलित है।

भूमानंद स्वामी का जन्म जामनगर जिले के ''केशिआ'' गाँव में सं. १८५२ वैशाख शुक्ल सप्तमी को हुआ था। पिता का नाम रामजीभाई तथा माता का नाम कुंवरबाई था। जाति से कडिया थे। पूर्वाश्रम का नाम रुपजीभाई था। पिताजीने भगवान स्वामिनारायण के विषय मेंअथसे इति तक का इतिहास बता दिये थे। परंतु दर्शन करना शक्य नहीं हो सका। इसमें कारण यह था कि उनके पिता बहुत बिमार रहते थे। इसलिये उन्हीं की सेवा में रहते थे। जीभ पर अहर्निश भगवान स्वामिनारायण का नाम रहता था। पिताजी के देहावसान के समय नंद संतो के साथ भगवान स्वामिनारायण वहाँ पधारे थे। पिता की तरह उन्हें भी भगवान के दिव्य दर्शन का लाभ मिला। दर्शन होते ही रुपजीबाई को समाधिलग गई। समाधिमें वे दिव्य तेजोमय अक्षरधाम में दिव्य सिंहासन पर बिराजान सहजानंद भगवान को देखे . अनंत मुक्त उनके पास बैठे हुये थे। श्री सहजानंद स्वामीने रुपजीभाईको अपने पास बुलाकर अपने कंठ की कंठी को उनके गले में पहना दिये। रुपजीभाई समाधिसे जागृत हो गये। सामने उन्हें ही देखकर महाराजके दिव्य स्वरुप को पहचान गये। दिव्य ज्ञान की प्राप्ति भी हो गई।

पिता के अक्षरधाम पधारने के बाद अपने तीनो भाईयों के साथ केशीआ गाँव से जीरागढ स्थाई हो गये। पंद्रह वर्ष की छोटी उम्र में एकनिष्ठा का ज्ञान हो गया था। तरधरी गाँव में तीन वर्ष तक एक शेठ के घर में नौकरी किये। वे कभी वेतन नहीं मांगे। एक दिन वेतन की मांग किये तो कपटी शेठ ने कहा कि मैंने सभी पैसे दे दिये . वे गिडगिडाते रहे लेकिन शेठ माना नहीं।

अंत में वे पंचाइत जुटाये और अपनी समस्या सभी के सामने रखे। ''पंच जहाँ वहाँ परमेश्वर'' इस तरह की अंधश्रद्धा दृढ थी जिससे यह कहा गया कि रुपजीव को तपाये हुये गोले को गले में पहनाया जाय यदि सही होंगे तो साफ पाक बंचजायेंगे।

दूसरे दिन महाजन के समक्ष इस तरह रुपजीव की परीक्षा ली गई। रुपजीव उस समय महाराज का नाम स्मरण करते रहे और आग के धधकते लोहे के गोले को कंठ में धारण कर लिये।

उन्हें थोडी भी आंच नहीं आई। सभी दिग्मूढ रह गये १८ वर्ष की उम्रवाले उस बालक की इस प्रकार दिव्य परीक्षा देखकर पंच ने निर्णय किया कि ''रुपजी'' निर्दोष है।

तीन वर्ष का वेतन लेकर रुपजी प्रसन्न होकर अपने घर गए। यहाँ पर गंगारामभाई मल्ल के साथ सत्संग हुआ। सत्संग पारसमणी कहा गया है। उन्होंने दृढता से निर्णय किया किं जीवन में विवाह नहीं करेंगे। ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे। भुज में ६ वर्ष व्यतीत करनेके बाद मूली वापस

અનુ. પેજ નં. ૩૧

आये। वहाँ से ''खाखा'' गाँव में तालाब के किनारे उनके मुख से स्वत: शब्द निकल पडे -

"न करो परण्या केरुं काम, कदी चूडो भांगे,
रारवो हरि संगे हेत, चूडो अमर रारवे।
पहेरो संतनी वरमाला, जमपासे नावे।
सोंपो तन मन धन, हरि तेडवा आवे॥

खारवा का एक सत्संगी यह गीत सुना और स्नान के बाद रुपजीभाई के साथ सत्संग किया। उस सत्संगी का नाम था ''धनाराबा''। उनका आतिथ्य सत्कार करके ''धनाराबा'' को साथ लेकर गढडा गये।

श्री सहजानंद स्वामी उस समय माणकी पर सवार होकर लक्ष्मीवाडी जा रहे थे। उसी समय रुपजीभाई वहाँ पहुंचे थे महाराज को देखते ही हृदय द्रवित हो गया। दर्शन की दिव्यता उन्हें पिघला दी। इसके बाद उनके हृदय से कविता निकल पड़ी - ''सर्व सरवी जीवन जोवा ने चालो रे...'' इसके बाद महाराज लक्ष्मीवाडी पधारे। रुपजीभाई साष्टांग प्रणाम किये। महाराज उन्हें हृदय से लगाकर भेंटे। सभी सभाजनों को उपदेश करने के बाद महाराजने पूछा रुपजीभाई ! संसारी बनना है कि साधु ? यह सुनकर महाराज के चरणों में गिर पड़े और कहने लगे कि शेष जीवन आपके चरणों में व्यतीत करना है।

महाराजने उन के दृढ वैराग्य को देखर परमहंस की भागवती दीक्षा देकर भूधरानंद स्वामी नाम रखा। कुछ समय के बाद भूमानंद नाम रखा गया।

घनश्याम लीलामृत भाग-१-२ दोहें के रुप में तथा चौपाई के रुप में लिघा गया ग्रंथ है। इसके अलांवा मास-तिथि, विरह के पद, भूमानंद काव्य (व्रज भाषा में) वासुदेव माहात्म्य, श्रीमद् भागवत पंचम स्कंद तथा दशम स्कन्धइत्यादि उपलब्धहै।

''जीव जोनो तपासी तारुं कोम रे'' ? इस तरह के पदों द्वारा ज्ञानोपदेश किये हैं। उनके कीर्तनो में लालित्य रस सिंचन, तथा उत्तम भाव का सुभग समन्वय किया गया है। भूमानंद स्वामी द्वारा रचित ''जमोथाल - जीवन जाऊँ वारी'' यह थाळ भी भूमानंद स्वामी द्वारा विरचित है : यह उन की हृदय की भावना का परिचायक है।

अपने हरिभक्त

प.भ. रवीमजीभाई वाधजीयाणी का ओस्ट्रेलीयन सरकार द्वारा सन्मान

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के खूब निष्ठावाले तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कृपापात्र मूल कच्छ के प.भ. डॉ. खीमजीभाई वाधजीयाणी को न्यु साउथ बेल्स में (ओस्ट्रेलीया) २९ अक्टूबर २०१६ को न्यु साउथ वेल्स की कोम्युनिटी की उत्तम सेवा तथा सुंदर योगदान के लिये ग्लेडीस बेरेज कलियन संसद के रुप में एवोर्ड प्रदान करके प्रतिष्ठित किया है। उनके इस एवोर्ड से वहाँ जाकर बसने वाले भारतीयों को बड़ी सहायता मिलेगी। सीडनी एन्टर प्रेन्चोरीयल इको सिस्टम में सुंदर योगदान के लिये दिया गया है। संप्रदाय के लिये यह बड़ा ही गौरव का विषय है। अपने प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने भी यह समाचार जानकर आनंद के साथ उनकी विशेष प्रगति के लिये हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किये है।

संप्रदाय का गौरव

अपने न्युजीलेन्ड में रहने वाले जीत रावल का न्युजीलेन्ड क्रिकेट टीम में समावेश

श्री नरनारायणदेव के निष्ठावाले अनन्य भक्त एवं प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के कृपापात्र रावल परिवार न्युजीलेन्ड ओकलेन्ड में बहुत समय से रहता है। जिनके युवा पुत्र श्री जीत रावल (मूल गुजरात के) क्रिकेट के अच्छे ओपनिंग बेटसमेन है। उनकी आनेवाली पाकिस्तान के साथ टेस्ट मेंच में पसंदगी की गई है। जो अपने पिता के साथ प्रति रविवार को सत्संग सभा में अवश्य आते हैं। उनकी क्रिकेट में उत्तरोत्तर वृद्धि हो इसके लिये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री आशीर्वाद प्रदान करते हैं। (प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल द्वारा ओकलेन्ड)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि

अक्टूबर-२०१९

रु. १,०१,०००/- अ.नि. -दिप्तीबेन नविनकुमार पटेल के मोक्ष के लिए - प्रे. शा.स्वामी सिद्धेश्वरदासजी - ह. डा. गोरधनभाई तथा मनीषभाई आस्का तथा नेहल तथा दिशा दशा ध्वनि।

रु. २५,०००/- मेनाबहन पुंजभाई मोहनदास पटेल - राणीप ह. भक्तिभाई पटेल

रु. ११,१११/- नेहाबहन तथा शैलीबहन कांतिलाल खीमाणी (दहीसरा) - बोल्टन

रु. ११,१११/- अ.नि. मावजीभाई विश्रामभाई खीमाणी परिवार - बोल्टन

रु. ११,०००/- धीरजभाई के. पटेल साईस सीटी - अहमदाबाद

रु. १०,७५०/- मुलजीभाई काचा सहपरिवार लेस्टर - यु.के.

रु. १०,०००/- पटेल जयश्रीबहन कांतिलाल - फिलाडेल्फिया

रु. ५,५५५/- गोहिल मनुभा तजुभा

रु. ५,१०१/- पटेल मुकेशभाई भीखाभाई - अहमदाबाद

रु. ५,१००/- अ.नि. रुक्ष्मणीबहेन लालजीभाई - ह. कृष्णकांतभाई - अहमदाबाद

रु. ५,००१/- गीताबहन मधुमारे देसाई - हिरावाडी

रु. ५,००१/- विजयाबहन राजेन्द्रभाई पटेल (लखतरवाला) निर्णयनगर

रु. ५,०००/- मीनाबहन के. जोषी - बोपल

रु. ५,०००/- मीनाबहन के. जोषी

रु. ५,०००/- प्रेमचंदभाई माधवभाई पाटडीया - करजीसण

रु. ५,०००/- प्रफुल पी. खरसाणी - अहमदाबाद

नवेम्बर-२०१९

रु. १,११,०००/- उमाबहन के. पंड्या, कीर्तिकुमार एन. पंड्या - अहमदाबाद

रु. २५,०००/- भोगीलाल कानजीभाई सोनी के शादी की सुवर्ण जयंती निमित्त - ह. विनेशभाई और बिनाबेहन सोनी - जीवराजपार्क - अहमदाबाद

रु. ६,०००/- वर्षाबहन अश्विनभाई सोनी - न्यु राणीप

रु. ५,००१/- रुची जय पटेल - साबरमती - ह. नयनाबहेन मुकेशभाई

रु. ५,००१/- अ.नि. भोगीलाल दलीचंदभाई दोशी - मोरबी - ह. सुपुत्र निलेष भोगीलाल दोशी

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

रु।. ५,०००/-	सुरेन्द्र सी. पटेल - अहमदाबाद
रु।. ५,०००/-	सोनी जयंतकुमार नटवरलाल, अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहेब मंडल - प्रे. नंदलालभाई
रु।. ५,०००/-	सोनी ठाकोरभाई नटवरलाल - अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहेब मंडल - प्रे. नंदलालभाई कोठारी
रु।. ५,०००/-	सोनी दिनेशभाई नटवरलाल - अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहेब मंडल - प्रे. नंदलालभाई कोठारी
रु।. ५,०००/-	मीनाबेहन के. जोषी - बोपल - अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि

अक्टूबर-२०१९

ता. ०२-१०-२०१६	श्री मनजीभाई हिराणी - यु.एस.ए.
ता. १५-१०-२०१६	श्री स्वामिनारायण मंदिर महिला मंडल हर्षद कोलोनी - ह. दासभाई
ता. २१-१०-२०१६	गोमतीबेहन रमेशभाई हिरालाल पटेल- डांगरवावाला - यु.एस.ए.
ता. २३-१०-२०१६	धर्मेन्द्रभाई और शैलेषभाई नाथालाल पटेल - चि. रीतु के जन्मदिन निमित्त डांगरवावाला हाल (बोस्टन)
ता. २७-१०-२०१६	देवांगभाई मनोजबाई भावसार - विसनगर - चि. अनामयना जन्म दिन निमित्ते (यु.ए.ई.)
ता. २८-१०-२०१६	श्री लक्ष्मीपूजन मनोजभाई जे. ब्रह्मभट्ट, भास्करभाई ब्रह्मभट्ट - नारणपुरा
ता. २९-१०-२०१६	आश्विन कृष्ण चतुर्दर्शी निमित्त प्रसादी के श्री हनुमानजी का विशेष पूजन - हा. नरेशभाई आई. पटेल

नवेम्बर-२०१९

ता. ०२-११-२०१६	पटेल मेना बहेन प्रहलादभाई कचरालाल बोगा - ह. रजनीकांत प्रहलादभाई - उंझा
ता. ०५-११-२०१६	लीलाबहेन जयंतीभाई पटेल - फेनीश - यु.एस.ए. (झुलासणवाला)
ता. ०६-११-२०१६	(सुबह) सोनी घनश्यामभाई नगीनदास पाटडीया - ध्रांगध्रा - प्रे. भक्तिहरी स्वामी। (दोपहर) नागरभाई चतुरभाई पटेल - कडी।
ता. ०७-११-२०१६	अ.नि. गाडाभाई जुगलदास पटेल - सोलागाम - ह. प्रजेश भरतकुमार पटेल - डेट्रोईट (यु.एस.ए.)
ता. ११-११-२०१६	(सुबह) जशुबहन रवजीभाई वरसाणी - मीरजापुर - कच्छ
ता. २०-११-२०१६	नितेषभाई नटवरलाल पटेल (करजीसणवाला) फ्लोरिडा (यु.एस.ए.)

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग आख्यायिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

धीरज के फल मीठे

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

एक गाँव में किसान की बहुत बडी जमीन थी । उस जमीन में बहुत सारे आम के पेड बोये गये थे और अच्छी मेहनत करके हरे भरे और खूब घने आम के पेड से पूरा आम का बगीचा भर गया था । ये आम के पेड पर मोर भी बेठे और छोटे छोटे आम भीआने लगे । गर्मी की धूप बढने लगी और आम भी बड़े होने लगे । अच्छे आम को देखकर बन्दरों को आम खाने का मन होता था । ४०-५० बन्दरों की टोली आम खाने के लिए आम के बगीचे में आई ।

आम के फलो को कोई नुकसान न हो इसलिए आम की देखरेख के लिए किसान का लडका बगीचे में चोकीदारी करता था । उसने इस बन्दर की टोली को लकडी और पथ्थर मारकर भगा दिया ।आम खाने कोन मिलने से सारे बन्दर निराश हो गये और अपने घर चले गये यह सारी बात उन बन्दरों ने आगेवान वृध्धबन्दर को बताई । इस वृद्ध बन्दर ने एक अच्छा रस्ता बताया । आप लोग थोडा सा परिश्रम करे क्योंकि यहा पर्याप्त मात्रा में खाली स्थान है जिसे किसी की कोरी मालिकी नही है । इसलिए आप लोग यहा मेहनत करिये और सुंदर आम का बगीचा तैयार करिये । फिर आप लोग अपने बगीचा में तैयार आमों को प्रेम से खा सकते हैं । और आप सब को कोई रोकेगा भी नही और मार भी नहीं खाना पडेगा । वृद्ध बंदर का ये प्रस्ताव सारे बंदरो को खूब पसंद आया कुछ बंदरो को नहीं भाया और थोड़े बंदर चारो तरफ आम की गुठळियाँ इकट्ठा करने लगे । अच्छी खासी मेहनत करके गुठलियों की वुआई कर दी । यहाँ तक तो सब सही काम हुआ । और मेहनत भी सही रास्ते पर हुई । पर बंदर किसका नाम है, दो चार पांच दिन में उन्हे बैचेनी होनी शुरु हो गई कि अभी तक पौधा बाहर क्युं नही आया ? बंदरो के मन में था कि गुठलियों कि बुआई करते हि, दो चार दिन में हि आम का बड़ा पेड़ हो जायेगा और उससे आम के फल मिलने लगेंगे । धीर के अभाव की वजह से जहाँ-जहाँ गुढलियों की बुआई की गई थी वहां बड़े-बड़े गड्ढे खोद कर गुदलियों को निकाल लिया ।

वृद्ध बंदर को यह देख कर बहुत दुख हुआ और कहने लगे, अरे मूर्खो इस उतावले पन से आम के फल नही लगते, धीरज रखनी पडती है । इसमें समय लगता है, पहले पेड़ बड़ा होता उसके बाद इसमें फल आते हैं ।

मित्रो ! समझने वाली बात है कि, धर्म, धरती और धरीज समय आने पर अच्छे फल देते हैं । इसलिये कहा गया है कि.....

"धीरे धीरे रे मना, धीरे सबकुछ होय ।
माडी सींचे सौ घडा, ऋतु आते फल होय ॥"

किसान सौ सौ घडो पानी से वृक्ष सीचता है उससे तुरंत फल नही आ जाते । ये तो जब ऋतु आती है, तब ही फल प्राप्त होते हैं ।

आज ही कंठी बांधलेने और दो दिन माला जपने के बाद यह सोचुं कि मैं सुखी हो जाऊँ ऐसा संभव नही है । ऐसे ही परमात्मा की भक्ति, ध्यान, उपासना की बात की जाए तो उतावला होने से फल की प्राप्ति नही होती । स्वामिनारायण भगवान कहते हैं कि जब तक भगवान की मूर्ति अंतर आत्मा में न दिखे तक ध्यान करते रहना चाहिए कायर होके प्रयत्न छोडना नही चाहिए । ऐसे प्रयत्नशील भक्त पर बड़ी कृपा होती है और ऐसे भक्त पर भगवान बड़े प्रसन्न होते हैं । इसलिए कहा जाता है कि आज के आज धनवान पुरुष बनना या सिद्ध पुरुष बनना ऐसा नही होता है, पुरुषार्थ करते रहने से सफलता की प्राप्त होती है ।

दुकान शुरु करते ही दूसरे दिन हि धनपति बन जाउ ये कैसे संभव है ।

कोलेज में प्रवेश मिलते ही तुरंत ग्रेजुएट हो जाए ये कहाँ से संभव है ।

आज ही भक्ति की शुरुआत करते ही भगवान कल ही

वरदान मांगने के लिए क्यों नही कहते हैं।

ये सारे लौकिक तथा पारलौकिक विषयों में साधना और अराधना में श्रध्धा, स्थिरता और धैर्य की जरुरत पड़ती है। इसलिए हमारे संत कहते हैं कि

"धीरज धर तु अरे अधीरा।"

धैर्यपूर्वक किया हुआ भजन भगवान तक पहुंचता है। मीठे फल के लिए धीरज रखना सीखो।

●

पूजा दो प्रकार की होती है

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

बालमित्रो ! आप प्रत्येक दिन पूजा करते हैं ? अगर हाँ, आइए आज हम ठाकुरजी की प्रत्यक्ष पूजा और मानसिक पूजा की महिमा का वर्णन करते हैं।

बोटाद के शिवलालभाई बहुत अच्छे सत्संगी थे। गोपालानंद स्वामी जब जब बोटाद पधारते तब एक बात अचूक होती कि शिवलालभाई का नियम था कि स्नानादिक क्रिया पूरी करके वे मंदिर ठाकोरजी की पूजा करते थे। जब शिवलालभाई पूजा करते तब गोपालनंद स्वामी उनके बगल में आकर जरुर बैठते मंदिर में एक बार शिवलालभाई को पुजा के समय दूसरा विचार आया और उसी समय गोपालानंद स्वामी पुजा में से खड़े होके चले गये और अपने आसन पर चले गये, पुजा पूर्ण होने पर शिवलालभाई स्वामीजीके पास गये और चरण स्पर्श कर पूछा स्वामीजी आज आप इतनी शीघ्र पुजा में से क्यों खाडे हो गये ? स्वामीजीने कहा शिवलाल तुम इतनी एकाग्रता से पूजा करते हो कि तुम्हारी पूाज में साक्षात भगवान पधारते हैं उनका दर्शन करने के लिए ही में तुम्हारे समीप बैठता हुं, लेकिन तुम्हारे मन में आज कुछ दूसरा विचार आया इसिलिए भगवान और मैं तुम्हारे स्थान से चले गयें।

पुजा के समय यदि कोई विचार आता है तो भगवान वहाँ से चले जाते हैं और हम यह फरियाद करते हैं कि मैं घण्टो पूजा करता हूँ फिर भी भगवान एक नही सुनते इस प्रकार की पुजा प्रत्यक्ष पुजा है।

उसी प्रकार मानसिक पूजा का महत्व भी कुछ कम नहीं है महाराज की आज्ञानुसार एकाग्रता पूर्वक मानसिक पूजा भी की जाए तो उससे बड़े फल की प्राप्ति की जा सकती है। निष्कुालनंद स्वामीने परचा प्रकरण में पर्वतभाई की मानसिक पूजा का एक प्रत्यक्ष उदाहरण दिया है।

अगतराई के पर्वतभाई व्यवसाय से किसान थे। प्रातः उठकर पूजा तो करते और पाँच वार मानसिक पूजा भी पुरे भक्ति भाव से करते। खेती की सीजन होने पर भी हल चलाना बंद कर मानसिक पुजा करतें। ऐसा कैसे संभव हो सकता है। परंतु खेती करते हुए भी हल चलाते और मानसिक पुजा करते। महाराज को भोग लगाने के पश्चात मन में चिंतन करते कि हे महाराज ! मैं ये बाजरे की रोटी और दही आप को अर्पित करता हुँ, कृपया आप इसे स्वीकार करें। इस प्रकार मानसिक पूजा के मध्यमें पर्वतभाई के दूसरे साथी की नजर उन पर पडी। पर्वतभाई की आंखो को डेखकर उन्होंने मान लिया कि उन्हें नींद आ रही है। इस चीज की जाँच करने के लिए उन्होंने पर्वतभाई के हल को धक्का मारा, इस कारण पर्वतभाई का हाथ हिलाता रोटी और दही जमीन पर गिर गयी, यह सब देख कर उनका साथी आश्चर्यचकित हो गया क्योंकि उनके हाथ मेंतो कुछ था ही नही तो ये रोटी वहाँ कहाँ से आ गयी ? फिर उसे ध्यान आया कि पर्वतभाई तो मानसिक पुजा में भगवान को भोग लगा रहे थे अर्थात् मानसिक रुप से की गई पुजा को भगवान प्रत्यक्ष रुप से स्वीकार करते हैं।

यह बात श्रीहरिने स्वमुख सारंगपुर के तीसरे वचनामृत में कही है कि भगवान की पूजा प्रेम से रोमांचित होकर करके प्रत्यक्ष पूजा या भगवान की मानसी पूजा करते हैं वो दोनो श्रेष्ठ है और बिना प्रेम भाव के रोमांचित न होकर सिर्फ शुष्क बनकर पूजा है और मानसी पूजा भी न्युन है।

हमारे इष्टदेव भगवानने स्वमुख से कहा है कि पूजा में हम कितनी बार बैठते है यह महत्व कानहीं है किन्तु में किस तरीके से करते है इस बात का महत्व है कुछ लोग तीन घंटे श्रीहरि की पूजा में समय देते हैं परंतु ध्यान ये देना चाहिए की श्रीहरि की पूजा तीन घंटे में सच्चे भाव से कितनी बार की ? चाय, पानी, नास्ता, फोन, व्यवहार अगर पूजा के साथ मन में चलता हो तो इससे अच्छा पांच मिनिट एकाग्र मन से रोमांचित होकर पूजा करना श्रेष्ठ होता है।

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "हम सबकुछ जानते हुए भी भूल जाते हैं"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

महाराजने कभी ऐसा नहीं कहा कि गृहस्थाश्रम छोड़कर ही भजन-भक्ति की जाय परंतु गृहस्थाश्रममें रहकर भी वर्णाश्रम धर्म का पालन तो करना ही पडेगा। परंतु हम कहाँ करते हैं। घर के कामों में मोह आसक्ति के बंधन में बंधजाते है। परमात्मा ने कृपा करे हमें मनुष्य जन्म देकर हमें बहुत से अधिकार और बहुत से अवसर प्रदान किये है। इस बात का हमें चिंतन करना है। मनुष्य जन्म प्राप्त होने पर देवता की भांति श्रेष्ठ बनना है कि पशु की भांति निम्न बनना है यह हमें तय करना है। पशु-पक्षी अपने प्रारब्धको बदल नहीं सकते। देवता गण भी अपने भाग्य का ही पुण्य भोगतें हैं . परंतु एक मात्र मनुष्य ही ऐसा है जो अपने पुरुषार्थ द्वारा उर्ध्वगति की तरफ जा सकता है। सभी मनुष्य अपनी उर्ध्वगति ही चाहते हैं। रात-दिवस की ही कामना करते हैं। सभी का एक ही लक्ष्य है। सुख की प्राप्ति और दुःख से मुक्ति। फिर भी सब दुःखी क्यों होते है। वास्तविक सुख भौतिक सुखनहीं है। भौतिक सुख का तो हम भोग कर ही रहे हैं। फिर भी हम दुःखी ही है। इसका कारण क्या है ? क्योंकि हमारे जीवन में सदाचार और नीति नियम का अभाव है। हम भौतिक सुख को प्राप्त करने हेतु गलत काम करने से भी नहीं हिचकिचाते व्याकुल होकर हमें जो नही करना चाहिए तो भी करने लगते हैं। हमें बहुत से लोग नीति और धर्मवाले लगते हैं परंतु उनका व्यवहारिक कार्य अनीति और अधर्मवाला होता है। व्यवहार में अनीति और अधर्म का आचरण करने से जाने अंजाने में हम भगवान से दूर हो जाते है। हम अधर्म आचरण के कारण दिन प्रतिदिन कुसंगी हो रहे हैं। और हमें इसका ख्याल भी नहीं है। इसीलिए भगवान से हमारी दूरी में वृद्धि होती जा रही है। यह भी एक दुःख का कारण है। सबसे बड़ा कारण यह है की हम दुसरो से सुख की अपेक्षा रखते हैं। इस जगत में लोग ऐसी अपेक्षा रखते हैं की अपने पुत्र पुत्री की ओर से सुख की प्राप्ति ही हो। और प्राप्त क्या होता है ? यह सबको ज्ञात है। दूसरे को दुःख से दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। और यदि कोई अपेक्षा नहीं रहेगी तो चिंता का कोई कारण ही नहीं रहेगा। कभी किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए। प्रत्येक कार्य के लिए सभी का धन्यवाद करना चाहिए। जिस का हम भोग कर रहे हैं यदि उस पर हम विचार करें तो हमे ख्याल होगा की उसमें सभी लोगों का बहुत बड़ा योगदान है।

हम जो अनाज खाते हैं उसमें भी कई लोगों का योगदान है। अनाज को बड़ी परिश्रम से खेतों में से दुकान से आता हैं। वहाँ से गेहूँ घर लाया जाता है। उसका आटा पीसकर जब रोटी बनती है और भोजन की थाली में जब आती है तब समझ में आता है की एख रोटी बनने में बहुत सारे लोगों का योगदान और उपकार सम्मिलित है। यदि उस प्रकार की सोच रखेंगे तो कभी किसी की यादे निंदा करने की आवश्यकता ही नही पडेगी। और किसी निर्जीव वस्तु की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति आपको एक फूल भी उपहार देता है तो यह सोचना चाहिए की उसने आपके बारे में कितना सोचा। कितनी प्रेम भावना वह आपको दिया गया होगा। दूसरो की भावना का सम्मान करना चाहिए। किसी के भी प्रति किसी प्रकार की यदि अपेक्षा नहीं होगी तो दुःख की भावना नहीं होगी और जीवन व्यतीत करना भी आसान हो जाएगा। जीवन को सरलता से जीने के लिए प्लानिंग करनी चाहिए।

१. जीवन व्यतीत करने के लिए लक्ष्य निर्धारीत करना चाहिए उसके अनुपालन हेतु कार्यरत रहना चाहिए।

२. प्लानिंग करके कार्य करना चाहिए। रोज प्रातः उठकर यह निश्चित करना चाहिए की आनेवाले कल में क्या कार्य करना है। जब सभी कार्य प्लानिंग करके किए जाते है तब दिन सरलात से बिना किसी परेशानी से व्यतित हो जाता है।

३. नियमित रुप से नित्य प्रभु का स्मरण करना चाहिए। परमात्माा के नाम से दिन का प्रारंभ करना चाहिए। चाहे

कितनी भी व्यस्तता हो भगवान के लिए निश्चित रुप से समय निकालना चाहिए। यदि आठ घंटे की निद्रा हो तो आधा घंटे पहले ही जाग जाना चाहिए।

४. अपनी जरुरत को समझना चाहिए और जितनी जरुरत हो उतना ही एकत्रित करना चाहिए। दूसरो को देखकर अपनी आवश्यकता का निर्धारण नहीं करना चाहिए। यदि हम संतोषी होंगे तो गलत कार्य में रुची नहीं बढेगी।

५. समय का सदुपयोग करना चाहिए। जो भी खाली समय प्राप्त हो उसका उपयोग अच्छे विचार अच्छे कार्यमें व्यतीत करना चाहिए। बरसो पहले भी किसी ने हमारा कुछ अहित किया हो और उसका ख्याल आए तो भी उसके बारे में अच्छा ही सोचना चाहिए। लोभ से दूर रहने के लिए आत्म नियंत्रण करना चाहिए। यदि कुछ भी समझ में न आए तो सो कर समय व्यतीत करना उचित है परंतु दूरविचार से दूर होना चाहिए।

६. जिस प्रकार के लोगो के साथ आप रहते है उन लोगो का प्रभाव आपके उपर निश्चित रुप से पड़ता है। इसीलिए अच्छे और सच्चे लोगों का संघ करना चाहिए।

७. सदैव आत्म निरीक्षण करना चाहिए। प्रतिदिन बैठकर सोचना चाहिए की मुझसे कुछ गलत तो नहीं हुआ और उसे सही करने का प्रयत्न करना चाहिए।

इतना सुंदर मनुष्य देह हमें प्राप्त हुआ है। उसका महत्व समझना चाहिए। महाराज की दया से हमें सत्संग प्राप्त हुआ है उसे कभी नहीं भूलना चाहिए। एक मनुष्य था। वह बहुत गरीब था। एक बार राजाने यह देखा। उन्हें बड़ी दया आई। राजाने अपने दश-पंद्रह चंदन के वृक्ष उसे जीवन निर्वाह के लिए दे दिए। परंतु वह मनुष्य चंदन के वृक्ष के भी कोयले बनाकर बेचने लगा।

राजाने यह देख लिया। तो उसने पूछा की क्या कर रहे हो ? राजाने उसको फिर समझाया की यह चंदन के वृक्ष बहुत किमती है और कहा की बाकी के वृक्षो का सदपुयोग करो। इसका अर्थ यह होता है कि मनुष्य का जीवन चंदन के वृक्ष की भांति मूल्यवान है। महाराजने सत्संग के माध्यम से हमे समझाया है की जीवन बहुत मूल्यवान है। आप सभी छपैया गए होंगे वहाँ संकल्प विकल्प जैसी कोई समस्या होगी ही नहीं क्योंकि वहाँ भगवान के सानिध्य का सुख है। सत्संग और महाराज की महिमा समझकर कार्य करेंगे तो भगवान सबकुछ परिपूर्ण करेंगे।

●

"वचनामृत की (२७३) गहनता"

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

वचनामृत भगवान की परावाणी है। भगवान का ही स्वरुप है। सत्संगी का एक भी घर ऐसा न होगा जहाँ वचनामृत न हो। और जिसके घर वचनामृत न हो वह सत्संगी नहीं हो सकता। इतना अधिक वचनामृत का महत्व है। एक भी हरिमंदिर ऐसा नहीं होगा जहाँ रात को वचनामृत न पढ़ा जाए, प्रत्येक मंदिर में वचनामृत पढ़ा जाता है। जिसे वचनामृत का ज्ञान होता है उसे दुनिया का कोई भी विद्वान नहीं हरा सकता। ऐसा ज्ञान वचनामृत में अर्जित है। महाराज के एक-एक शब्द विचारने योग्य है। परंतु उसका अर्थ कोई समझ नहीं पाता। समस्त सत्संग समाज वचनामृत का वांचन करता है। परंतु वचनामृत में श्रीजी महाराज का जो अभिप्राय है उसे समझ नहीं पाते। श्रीजी महाराजने जो उपदेश दिया उसे वचनामृत कहते हैं। वही हमारा वास्तविक धन है। वचन रुपी परावाणी संस्कृत में है। श्रीजी महाराज जो बोले उसे संत लिखे। उसे संग्रह करने वाले पांच संत थे। वचनामृत में २७३ वचनामृत हैं। वचनामृत में जो भी उक्ति प्रत्युक्ति है उसमें वर्ष मास, तिथि, स्थल सभी का उल्लेख किया गया है। किसने प्रश्न किया किसने उत्तर दिया, उत्तरका रहस्य क्या है इन सभी का बड़ी विलक्षणता से निरूपण किया गया है।

वचनामृत में सबसे प्रधान वस्तु क्या है ? प्रत्यक्ष ब्रह्म को प्रगट ब्रह्म को पहचानना ही प्रधान वस्तु है। परब्रह्म को साकार रुप से जानकर उसी में आत्मनिष्ठा समर्पण का भाव रखकर उपासना करनी चाहिए। ब्रह्म को समझने के लिये जिस तरह रामायण, भागवत हैं उसी तरह वचनामृत हैं। वचनामृत के अध्ययन से अन्तःकरण की कलुषता नष्ट होती है और आभ्यन्तर प्रकाश का फैलाव होता है। वचनामृत स्वरुपनिष्ठा का ग्रन्थ है। इसलिये गहन है। तत्वज्ञान से भरा हुआ है। तुलसीदासजी का रामायण चरित्र ग्रंथ है। श्रीमद् भगवद्गीता में कर्म, ज्ञान, भक्ति की बात की गई है। कोई

कहता है कर्म श्रेष्ठ है, कोई कहता है ज्ञान श्रेष्ठ है, कोई कहता है भक्ति श्रेष्ठ है। इस तरह गीता गहन है लेकिन वचनामृत गहन होते हुये भी सरल है।

गढपुर में दादा खाचर के दरबार में कडवे नीम के नीचे अति मधुरवाणी का उच्चारण ही वचनामृत है । ब्रह्मानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी इन पांच संतो के योगदान का रुप वचनामृत है । वचनामृत के विषय में महाराजने कहा कि किसी सत्पुरुष के मुख से समझपाना बड़ा कठिन है। जिसे परावाणी में रस हो वही इसके सार को समझ सकता है। इसलिये बड़ी तल्लीनता के साथ अध्ययन करना चाहिए।

प्राय: कितने सत्संगियो को प्रथम का ६४ वां वचनामृत समझ में नही आता । जैसे प्रथम के ६४ वे वचनामृत में आत्मा, अक्षर, देह, देही, द्रष्टा, दृश्य, हेय, उपादेय, ब्रह्म, ब्रह्मसुषुप्ति इत्यादि शब्दों का अर्थ बड़ा गहन है । लेकिन महराजने इन सभीको बड़ी सरलता से समझाया है । ज्ञाता संतो से भीइसे समझाजा सकता है । एकवार स.गु. गुणातीतानंद स्वामीने सभा में उनके संतो से कहे कि 'अमृत लाओ'' यह सुनकर संत बड़े विचार में बड़ गये । वचनामृत ही अमृत है । इसलिये इस वचनामृत को महाराज की परावाड़ी समझकर अध्ययन चिन्तन करना चाहिये । सभी वचनामृत अद्वितीय है।

प्रथम का ५१ वां वचनामृत हृदय है, पराभाव है, श्रेष्ठतम, सर्वोपरिता का परिचायक है, ज्ञानमार्ग का तत्वज्ञान है । महाराजने मध्यम के १३ वें वचनामृत में कहा है कि गढडा कोई शहर नहीं है, हम जहां रहते हैं वही अक्षरधाम है। ऐसा विचार आने से मायिक भाव हट जाता है। इस तरह वचनामृत के रहस्य को समझना चाहिये।

●

"भगवान जो करते है वह अच्छे के लिये"

– पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

एक गाँव में एक व्यापारी रहता था, वह उस गांव का एक मात्र व्यापारी होने से बड़ी संपत्तिवाला हो गया। वह लालची हो गया। उसने अपनी बड़ी रकम को शहर में किसी व्यापारी के यहाँ व्याज पर रखने के भाव से जाने की तैयारी किया, संयोग से सीढी से गिरने के कारण उसे चोट आ गई, कोई अंग भंग नहीं हुआ . उसके मन में ऐसा हुआ कि भगवानने अच्छा नहीं किया । अफसोस की जगह वह भगवान को उलाहना देने लगा।

उसी गांव में एक और भगवान का भक्त रहता था। उस भक्त का इस शेठ के साथ अच्छा संबन्धथा । कभी-कभी उसेक पास आकर भगवान से संबंन्धी बात करता रहता। उसे पता चला कि शेठ गिर गया है तो समाचार पूछने के लिये उसके घर आया । शेठ भगवान को दोषी बताते हुए कहने लाग कि मैं कभी गलत काम नहीं किया था फिर भी भगवानने इस तरह का हमें दंड दिया । मेरे काम में विध्न उपस्थित किया।

वह भगत बड़ी शांति से करुणाभाव से कहा कि 'ईश्वर ने जो किया वह अच्छा ही किया। इस तरह का विश्वास रखोंगे तो सब कुछ अच्छा हो जायेगा। अरे भगत ! आप ऐसा कहते हो ? मेरा सभी कार्य रुक गया, सभी आयोजना बिगड गई। जो अच्छा करने जा रहे थे वह खराब हो गया। मुझे इसमें कुछ अच्छा नहीं दिखाई देता । भगतने कहा कि शेठजी आपकी दृष्टि केवल वर्तमान को देख सकती है। आप सत्य को नहीं देख सकते। लेकिन हम बड़ी दृढता से कह सकते हैं कि जो हुआ वह अच्छा ही हुआ।

भगत जी कुछ दिन के लिये बाहर गाँव गये । जब लौटकर आये तो पुन: शेठ से मिलने आये। शेठ देखते ही भगत के पैरपर गिर पड़ा और कहने लगा कि आपजो कह रहे थे कि भगवान जो करते हैं वह अच्छा ही करते हैं। मुझे इसका अनुभव बाद में हो गया। यदि मेरा पैर टूटा नहीं होता तो हम शहर में जाते और चोर लोग मेरी प्रतिक्षा कर रहे थे कि शेठ शहर की तरफ जाये तो रुपये भी चुरालें और जान से मारडाले। भगवानने अच्छा किया कि मेरा पैर टूट गया और हम बच गये। आपकी बात उस समय समझमें नहीं आई अब आ गई। विघ्न आने का कारण थोड़े से बड़ा विघ्न टल गया।

मुझे नया जीवन ही नहीं, जीवन की सच्ची दृष्टि मिल गयी। जगत नियन्ता ईश्वर जो भी करते है वह अच्छे के लिये करते हैं । भगवान श्रीहरि में शरणागति का भाव रखने से आत्यंतिक कल्याण हीं नही होगा बल्कि आनेवाली सभी सांसारिक बांधाये अपने आप शांत हो जायेगी।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में शरदोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं धर्मकुल के आशीर्वाद से एवं स.गु. पू. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से आश्विन शुक्ल शरद पूर्णिमा के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अंतर्गत परम कृपालु श्रीनरनारायणदेव के दिव्य सानिध्य में शरदोत्सव धामधूम से मनाया गया, मंदिर के विशाल प्रांगण में सुंदर एवं सुरम्य श्वेत-वस्त्राच्छादित मंडप में सुशोभित स्टेलीनेस स्टील के मंडप अंतर्गत ठाकुरजी को बिराजमान कराकर श्री नरनारायणदेवोत्सव मंडल के सभी सदस्य परम्परागत उत्सव का आनंद उटाया इस अलौकिक उत्सव की समाप्ति निराजन प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से पोहा का प्रसाद वितरित किया गया। सभी भक्तजन इस शरदोत्सव का दर्शन कर करके धन्यता का अनुभव किये । (शा. स्वामी नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में काली चतुर्दशी, दिपालली एवं अन्नकूटोत्सव मनाया

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के अलौकिक सानिध्य में एव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पूज्य महंत स.गु. पू. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से दीपोत्सवी कार्यक्रम बड़े ही धामधूम से मनाया गया।

काली चतुर्दशी : आश्विन शु-१५ काली चतुर्दशी का पूजन भगवान श्री स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री श्लोक १२७ में की हुई आज्ञानुसार कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री हनुनमानजी का पूजन सायं ६-३० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से परंपरागत अनुसार सम्पन्न हुआ, अंत में अन्नकूट की आरति की गयी। पार्षद श्री बाबुभगत और महादेव भगत श्री हनुमानजी का श्रृंगार आदि करके धर्मकुल का प्रसन्न किये।

दिपावली-समूह शारदा-खातावही पूजन : आश्विन कृष्ण अमावस्या दिपावली के शुभ पर्व पर परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में प्रसादी के सभा-मंडप में सायं ६-०० से ७-३० बजे तक मंदिर के पुरोहित श्री कमलेशबाई आदि लोग समूह शारदा-पूजन वैदिक परम्परागत शास्त्रोक्त पद्धति से हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कर-कमलो के द्वारा हजारो हरिभक्तों के खातावही का विधिवत पूजन सम्पन्न हुआ । खुद के खातावही का पूजन कराने वाले व्यापारी हरिभक्तो ने यहाँ पर उपस्थित रह कर अलौकिक लाभ लेकर अपने व्यापार में नीति नियम और प्रामाणिकता से करने के लिए परम कृपालु श्री नरनारायणदेव को प्रार्थना की । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आरती करके श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने हेतु पधारे थे।

नूतन वर्ष अन्नकूटोत्सव : संवत २०७३ कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा नूतन वर्ष के मंगल पर्व में प्रात: ५-०० बजे परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की मंगला-आरती प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हस्तो से हुई। सुबह ६-३० बजे श्रृंगार आरती प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने की । इस प्रसंग में हजारो संत हरिभक्तोने दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के बैठक में संत-हरिभक्तों ने भारी संख्या में नूतन वर्ष में धर्मकुल का दर्शन करके आशिर्वाद प्राप्त किया। प.पू. लालजी महाराजश्री ठाकुरजी दर्शन करके बैठक में पधारे । मंदिर के सभा मंडप मंदिर के पुरोहित श्री कमलेशभाई संपूर्ण वर्ष का नीति-नियम का वांचन किया । इसी प्रकार प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री और प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्रीने समस्त बहनो को नूतन वर्ष का आशिर्वाद के साथ दर्शन का सुख प्रदान किया । दोपहर १२-०० बजे नरनारायणदेव को भव्यातिभव्य अन्नकूट का भोग लगाकर आरती उतारी गयी इस छप्पन भोग अन्नकूट दर्शन हेतु विविधस्थलो से हरिभक्तो का समागम हुआ । सायं ४-३० बजे तक अन्नकूट-दर्शन खुल्ला रखा

गया था। दिपावली के समग्र प्रसंग में प.पू. महंत स्वामी के मार्दर्शनानुसार ब्रह्मचारी स्वामी श्री राजेश्वरानंदजी, भंडारी स्वामी जयप्रकाशदासजी, कोठारी जे.के. स्वामी (कमिटी बोर्ड सभ्यश्री), योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, नटु स्वामी, शा. नारायणमुनि स्वामी, हरि स्वामी आदि मंडल के समस्त संत-पार्षद और हरिभक्तोने कठिन सेवा बनाने से लेकर २८ देश के ग्रामों स्थित संतोमे साक्षात् सेवा दी अपने प्रत्येक हरि मंदिरो में अन्नकूट का प्रसाद साथ-साथ तिथी-कलेन्डर भी वितरित किया। सभी हरिभक्तजनो को परमानंद हुआ। (शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

रंगमहल में विराजित सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव

श्रीनगर अहमदाबाद में सर्वोपरि श्रीहरि जब-जब पदार्पण करते थे तब-तब कालुपुर स्थित श्री स्वामिनारायण मंदिर में ब्रह्मचारी निवास के बगल में स्थित रंगमहल में निवास करते और जहाँ अभी छत्री है वहाँ उसी के नीचे कुआ है वहाँ नित्य स्नान करते थे। इन्ही भगवान के अलौलिक निवास स्थान जो अक्षरधाम में परात्पर परब्रह्म परमात्मा सर्वावतारी श्री घनश्याम महाराज है वैसा ही स्वरुप लेशमात्र नही, अपितु अणुमात्र भी नही, ऐसा स्वरुप नित्य दर्शन दे रहा है। जिनका १३१ वाँ पाटोत्सव महोत्सव कार्तिक शुक्ल ११/१२ के दिन प्रातः ७-०० बजे श्री हरिकृष्ण महाराज के स्वरुप का षोडशोपचार पूजन-अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से वेदोक्त विधिसे सम्पन्न हुआ। श्री घनश्याम महाराज के पुजारी पुज्य देव स्वामी आज सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज को अलौकिक वस्त्र-सुवणाभूषण का श्रृंगार करके सुंदर दर्शन कराए। इस दर्शन को सुबह १०-०० बजे खुला रखा गया।

अन्नकूट आदि की संपूर्ण व्यवस्था पू. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी के शिष्य-मंडल ने की। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन त्रिदिनात्मक (सत्संगिजीवन तीसरा प्रकरण) पारायण संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार विद्वान वक्ता महोदय पू. स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के द्वारा सम्पन्न हुआ। पाटोत्सव-पारायण के यजमान श्री प.भ. श्री शामजीभाई हरजीभाई हालाई (गोडपर-कच्छ) परिवार ने अलौकिक लाभ लेकर धर्मकुल का आशीर्वाद प्राप्त किया। (शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच-बापूनगर में युवा शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से स.गु. महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदास की प्रेरणा और कोठारी स्वामी हरिकृष्णदासजी आदिक युवान संतो के मार्गदर्शन तथा यहाँ के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सहयोग से ता. २-१०-१६ रविवार के दिन तीन घंटे की युवा शिबिर रखी थी। जिस में ८०० जितने युवान एव बालकोने भाग लिया।

शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर), स.गु. स्वामी गुरुप्रसाददासजी, शा.स्वामी भक्तिनंदनदासजी (अंजली-वासणा), स्वा. ध्यानप्रियदासजी (बावला) तथा एप्रोच मंदिर के ब्रह्मनिष्ठ संतो ने निर्व्यसनी जीवन सत्संगी की महत्ता तथा सम्प्रदाय का मूलभूत सिद्धांत आदि विषयो के उपर उद्बोधन किया था। शुभम एस बाबरिया नामक बालक ने गढडा प्रथम प्रकरण का ४८ वाँ वचनामृत अंग्रेजी भाषा में सुंदरता से मुखपाठ सुनाया।

एप्रोच मंदिर में प्रत्येक शनिवार रात्री में नियमित युवा सभा होती है। जिस उपक्रम में २५ सभा पूर्णता के उपलक्ष अंतर्गत २६ वीं शिबिर के विशाल सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। मंदिर में बाल-सभा भी हुई थी। तेजस्वी बालको को प.पू. लालजी महाराजश्रीने सन्मानित करके प्रोत्साहित किये थे। हम सभी को धीरे-धीरे सहजता से जो भगवान मिले है उनकी यथार्थ महिमा समझकर उसी महिमा को अन्य को भी पहचान करवाना इसके जैसा अन्य कोई भी पुण्य का काम नही है। अतः इस कार्य को हम सब मिलकर करते रहे ऐसा कहकर प.पू. लालजीमहाराजश्रीने विशेष सत्संग वृद्धि हेतु आशीर्वाद दिये थे।

शिबिर के अंत में सभीके लिए भोजन-प्रसाद की व्यवस्था की हुई थी।

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिन्दु मंदिर (आई.एस.एस.ओ.) रजाई का (केनेडा) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से केनेडा में खूब ठन्ढे विस्तार रजाई में रहने वाले श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान युवा सत्संगियों के विशेष आग्रह पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा पू.पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) प्रथमबार पधारे थे। वहाँ पर युवा सत्संगियों के उत्साह, निष्ठा तथा व्यग्रता देखकर यहाँ पर मंदिर बनेगा तथा श्रीहरि विराजमान होंगे ऐसा संकल्प किया था। उसके बाद प.पू. महाराजश्री की कृपा से तथा पू. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से एवं हरिभक्तों के प्रयाश से सत्संगियों में भी जोश बढ़ गया और आई.एस.एस.ओ. यु.एस. तथा टोरन्टो केनेडा मंदिर के सहयोग से जमीन संपादित करके स्थानिक हरिभक्तों के तन, मन, धन के सहयोग से सुंदर मंदिर का निर्माण हो गया।

ता. ५-११-१६ को मूर्ति प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन किया गया था।

नूतन वर्ष के प्रारंभ में ता. ३-११-१६ से प्रथम यज्ञ का प्रारंभ हुआ। जिस में बहुत सारे लोग यजमान बनकर लाभ लिये। सायंकाल ४-०० बजे कथा का प्रारंभ शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (शिकागो) के वक्ता पद पर हुआ। सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ पू.पी.पी. स्वामी पधारे थे तथा भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किये थे। मंदिर का बड़ी सूक्ष्मता से निरीक्षण करके मूर्ति का दर्शन करके खूब प्रसन्न हुये थे। ता. ४-११-१६ को प्रातः यज्ञारंभ हुआ। जिसमें प.पू. आचार्य महाराजश्री विराजमान थे। अपने हाथों से आहुति अर्पण किये थे। सायंकाल जेतलपुर मंदिर के भक्तिनंदन स्वामीने कथा की थी। कथा के बाद पू. पी.पी. स्वामीने यहाँ के हरिभक्तों को मंदिर की व्यवस्था का ज्ञापन दिया था। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाचन दिया था।

ता. ५-११-१६ लाभ पंचमी के पवित्र अवसर पर प्रातः प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे श्री हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक संपन्न हुआ। बाद में यज्ञ की पूर्णाहुति की गई।

प्रासंगिक सभा में सेवा करने वाले हरिभक्तों की सेवा का गुणगान किया गया था।

पू.पी.पी. स्वामीने मंदिर का माहात्म्य समझाया था। आई.एस.एस.ओ. प्रेसीडेन्ट प.भ. जगदीशभाई (शिकागो) बड़े भगत प.भ. देवराजभाई बोस्टन से अंकितभाई, डी.सी. थी राजुबाई, हंसबिल से हरिभाईने अपनी भावना व्यक्त की थी। प.पू. आचार्य महाराजश्री का चरण स्पर्श का लाभ लिया था। (यज्ञेश पटेल आई.एस.एस.ओ. रजाई के केनेडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम चेरीहील ९ वाँ पाटोत्सव (आई.एस.एस.ओ.)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के सुंदर आशीर्वाद से चेरीहील जेतलपुरधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर का नौवां पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध् यमें हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हस्त से मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी का षोडशोपचार पूजन, महाभिषेक विधिवत हुआ। उसके बाद श्रृंगार आरती करके अन्नकूट का भोग लगाया गया। सभा में यजमान परिवारो का सन्मान तथा अन्य सेवा करने वालो की सूचि उद्बोधित की गयी। विविधचेप्टरो से आए संतो की प्रेरणादायी वाणी के बाद समस्त हरिभक्तों को प.पू. महाराजश्रीने शुभाशीर्वाद प्रेषित किये। (प्रवीणलाल शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

नूतन वर्ष के पर्व पर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में देवों के अन्नकूटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू.श्री लालजी महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

दिपावली के पावन पर्व पर कालुपुर मंदिर में अपने करकमलों से सामूहिक चोपडा पूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री।

समस्त सत्संग को सूचना हेतु

समस्त सत्संग (संत एवं हरिभक्त समस्त) को विशेष सूचित किया जाता है कि आप सभी के द्वारा प्रकाशित होनेवाली पत्रिका, पोस्टर, बेनर, पुस्तक, सीडी केसेट कवर इत्यादि में धर्मकुल की छबी छापने के लिये पूर्व प.पू. आचार्य महाराजश्री की परमीशन एवं आज्ञा अवश्य लें। इससे पहले अगर कोई नाम एवं छबी का उपयोग हुआ है तो उसमें अहमदाबाद देश की अनुमति नहीं ली गई है जिसका ध्यान रहे। और कुछ अन्य प्रसंगपर छपी हुई निमंत्रण पत्रिका में अहमदाबाद देश के संतो के नाम उनकी अनुमति के बिना ही अलग-अलग छपे हुए है जिससे सत्संग में गैरसमझ फैलती है। इसलिए समस्त सत्संग इस पर सावधानी रखे ऐसा हमारा अनुरोधहै इस सम्बन्धमें अगर किसी को कोई शंका है तो उसके समाधान के लिए कोठार ओफिस का संपर्क करें।

(आज्ञानुसार)

Praful Kharsani